IMPOSSIBLE GILLETTE.



FERDINANDO FREGA

— NANDO THE SCRIBE — フレガ・サン — Ferdinando —

असंभव जिलेट

THE SYSTEM · 09

अपनी ज़ुबानी कही गई कहानियों का एक संग्रह — मोर्ताडेला के बहाने एक पिता द्वारा सिखाए गए मन-ही-मन हिसाब के पाठ, रूस से एक पलायन, रात के तीन बजे एक फल-विक्रेता की माफ़ी, होटल के कुली का भेस, बीस किलो पुरानी पड़ चुकी पासपोर्ट फ़ोटो और असंभव ढंग से बच निकलने का एक वृत्तांत — जिनमें जिलेट कोई नौकरी नहीं, बल्कि लेखक की त्वचा के नीचे चलने वाला ऑपरेटिंग सिस्टम है।

पुष्पिका

फर्दिनांदो फ्रेगा — लेखक नांदो — पाँचवाँ ब्लेड

व्यवहार संहिता के कथात्मक अग्रदूत। उन्होंने एक ही विचार के इर्द-गिर्द एक डॉलर का संपादकीय इकोसिस्टम खड़ा किया: वित्त की समस्या पैसा नहीं है। उसकी समस्या व्यवहार है।

ONEDOLLAR-STORIES इकोसिस्टम के भीतर संपादित और संकलित। डिजिटल संरचना: **NAPLES-POST** · **NOASPECTTIME** · **ONEDOLLAR-STORIES**। पहली बार 2026 में प्रकाशित। डिजिटल पठन के लिए अनुकूलित, साफ़-सुथरे आधुनिक टाइपोग्राफ़िक लेआउट में संयोजित। संयुक्त राज्य अमेरिका में प्रकाशित।

कॉपीराइट सूचना

© 2026 फर्दिनांदो फ्रेगा। सर्वाधिकार सुरक्षित।

इस प्रकाशन का कोई भी अंश लेखक की पूर्व लिखित अनुमति के बिना किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम से — जिसमें फ़ोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग या अन्य इलेक्ट्रॉनिक अथवा यांत्रिक विधियाँ शामिल हैं — पुनरुत्पादित, वितरित या प्रसारित नहीं किया जा सकता; अपवाद हैं समीक्षात्मक लेखों में शामिल संक्षिप्त

उद्धरण और कॉपीराइट क़ानून द्वारा अनुमत कुछ अन्य ग़ैर-व्यावसायिक उपयोग। इस कृति का अनधिकृत उपयोग, पुनरुत्पादन या वितरण निषिद्ध है।

प्राक्कथन

इस किताब के शुरू होने से पहले एक बात समझ ली जाए: मैं किताबें नहीं बेचता, उनसे कमाई नहीं करता, पाठकों को ग्राहकों में नहीं बदलता, और कुछ भी नहीं माँगता। मैं बाज़ार के बाहर से लिखता हूँ, उसे ख़ुश करने के लिए नहीं, बल्कि वह उजागर करने के लिए जिसे वह नियंत्रित नहीं कर सकता। ख़ुद वेब ने मेरा नाम जिलेट वाली खोज में धकेल दिया, और इसीलिए यह त्रयी मौजूद है: जिलेट मैन को दर्ज करने के लिए — किसी उत्पाद के रूप में नहीं, किसी अभियान के रूप में नहीं, बल्कि एक शक्ति, एक किरदार, एक संरचना के रूप में। वह कुछ नहीं माँगता। वह किसी चीज़ की अपेक्षा नहीं रखता। फिर भी उसे वह मिल चुका है जो मायने रखता है: पहचान। अरबों डॉलर की व्यवस्थाओं से संचालित दुनिया में, यह किताब इस बात का प्रमाण है कि एक आवाज़ बिना अनुमति, बिना समझौते और बिना किसी क़ीमत के उठ सकती है।

“जिलेट असंभव” का असली मतलब क्या है

जिलेट असंभव वह क्षण है जब एक आदमी किसी व्यवस्था का हिस्सा होना छोड़ देता है और उस व्यवस्था की कसौटी बन जाता है।

यहीं **फ्रेगा** — अनुशासन, सटीकता और आंतरिक ज्यामिति से गढ़ा गया आदमी — **जिलेट** से टकराता है — उस ब्रांड से जो चेहरों की नहीं, बहानों की हजामत बनाता है।

ज़्यादातर लोग किसी कंपनी में शामिल होते हैं। कुछ लोगों को कंपनी नए सिरे से लिख देती है। मैं दूसरी क़िस्म का था।

“असंभव” का संबंध कठिनाई से नहीं है। इसका संबंध अनिवार्यता से है — वह बिंदु जहाँ एक आदमी की संरचना और एक ब्रांड का डीएनए एक ही आवृत्ति पर जकड़ जाते हैं और अलग होने से इनकार कर देते हैं।

जिलेट असंभव = **मानकों से गढ़ा गया एक आदमी, पहचान में समा चुका एक ब्रांड, एक जीवन जो अपने ही अनुशासन से अलग होने से इनकार करता है।**

घोषणा

“मैंने जिलेट को नहीं चुना। मेरी संरचना ने उसमें अपना ही प्रतिबिंब पहचान लिया।”

या वह रूप, जो धड़ाम से बंद होते धातु के दरवाज़े की तरह असर करता है:

“मैंने जिलेट के लिए काम नहीं किया। मैं उसका मानक अपनी रगों के ख़ून में लिए चलता था।”

यह ब्रांडिंग नहीं है। यह ब्लेड से तराशी गई जीवनी है।

परिचय

“कुछ आदमी हाज़िरी लगाते हैं। कुछ आदमी गढ़े जाते हैं। मैं गढ़ा गया था। जिलेट कोई नौकरी नहीं थी — वह मेरी त्वचा के नीचे चलने वाला ऑपरेटिंग सिस्टम था। उसने मुझे समय की पकड़, सटीकता और वह अनुशासन सिखाया जिसने मुझे खड़ा रखा। इसीलिए वे इसे असंभव कहते हैं: उस ढाँचे को उखाड़े बिना, जो मुझे सीधा खड़ा रखता है, आप इसे मुझसे अलग नहीं कर सकते।”

पहले चीरे से पहले

ज़्यादातर लोग अपनी ज़िंदगी उन व्यवस्थाओं की स्वीकृति पाने की कोशिश में बिता देते हैं जिन्हें उन्होंने नहीं बनाया। कॉरपोरेट व्यवस्थाएँ। संपादकीय व्यवस्थाएँ। सामाजिक व्यवस्थाएँ। पारिवारिक व्यवस्थाएँ।

वे ढल जाते हैं। वे मोलभाव करते हैं। वे मान्यता का इंतज़ार करते हैं।

मुझमें वह धैर्य कभी नहीं था।

मेरी ज़िंदगी तीन ब्लेडों ने गढ़ी।

पहला ब्लेड एक ऐसे आदमी का था जिसने एक ठुकराए गए विचार को आधुनिक इतिहास के सबसे जाने-पहचाने नामों में से एक में बदल दिया: **किंग कैंप जिलेट**।

दूसरा मेरे पिता का था — द जिलेट कंपनी के भीतर चालीस साल — जिन्होंने मुझे सिखाया कि अनुशासन चिल्लाता नहीं; वह नाप-तौलकर साधता है।

तीसरा अदृश्य है। वह मेरा है। वह उद्योगों, पहचानों, देशों, असफलताओं, सफलता, लेखन, मौन — और उन व्यवस्थाओं को चीरता चला जाता है जो अब भी नहीं जानतीं कि मुझे कहाँ रखें।

यह किताब सफलता का उत्सव नहीं है। यह संस्मरण नहीं है। यह व्यवसाय की नियमावली नहीं है। यह स्वीकृति माँगता साहित्य नहीं है।

यह इस बात का दस्तावेज़ है कि क्या होता है जब एक आदमी यह पूछना छोड़ देता है कि वह कहाँ का है, और ऐसे ढाँचे खड़े करने लगता है जो यथार्थ को उसे मान्यता देने पर मजबूर कर दें।

कुछ नाम उत्पाद बेचते हैं। कुछ नाम ग़ायब हो जाते हैं। कुछ नाम हाथ के चले जाने के बहुत बाद तक निशान छोड़ जाते हैं।

यह तीन ब्लेडों की कहानी है। और इस बात की कि एक नाम कभी काफ़ी क्यों नहीं था।

मोर्ताडेला

मैं पाँच साल का था, पर दूसरे बच्चों जैसा बच्चा नहीं। मेरे पिता जैसे पिता हों, तो आप समझ जाएँगे क्यों।

वे हर सोमवार भोर में निकल जाते थे और पूरे हफ़्ते के लिए ग़ायब हो जाते थे। जिलेट ने उन्हें पालक-संरक्षण में रखा हुआ था। वह उन्हें मुझे सिर्फ़ शुक्रवार की शाम लौटाती थी, जब वे दरवाज़े की घंटी बजाते और मैं दौड़कर उनके पास जाता — पहले उन्हें गले लगाने, फिर उनकी फ़िएट 127 को गैराज में "चलाने"। कंपनी की कार।

अंदर, वे बगल वाली सीट पर बैठते थे। मैं स्टीयरिंग पर रहता था। हमारी बातचीत किसी और ही आयाम में जीती थी।

उन्होंने मुझसे कहा कि मुझे हिसाब मन में लगाना होगा। क्योंकि एक दिन, अगर मुझे कैलकुलेटर नहीं मिला, तो मैं भटक जाऊँगा। तो, अभ्यास शुरू हो गए।

"नांदो... अगर 100 ग्राम मोर्ताडेला 800 लीरा की आती है, और मैं 120 ग्राम ख़रीदूँ, तो मुझे कितना देना होगा?" मैंने फ़ौरन जवाब दिया। वे मेरे पिता थे — बरसों बाद जाकर ही मुझे समझ आया कि वे मेरे भीतर क्या गढ़ रहे थे। पर उनका प्यार इतना बड़ा था कि उनसे आई कोई भी चीज़ भारी नहीं लगती थी।

फिर वे आगे बोले: "और अगर मैं 90 ग्राम ख़रीदूँ? और बयासी ग्राम?" हर बार सटीक जवाब। मैं उन्हें निराश नहीं करना चाहता था। वह सहज वृत्ति मुझसे कभी नहीं छूटी।

बरसों बाद, जब मैं अकाउंटिंग पढ़ रहा था, उन्होंने सदी का सवाल पूछा: "अगर मैं 100 में ख़रीदूँ और 120 में बेचूँ, तो मैं कितने मार्कअप पर काम कर रहा हूँ?" "बीस प्रतिशत," मैंने कहा। "बढ़िया।"

"लेकिन अगर मैं 100 में ख़रीदूँ और 120 में बेचूँ, और मुझे सकल मार्जिन जानना हो, तो वह कितना है?" उन्होंने मेरी ओर देखा। मैंने उन्हें बोलने नहीं दिया। "सोलह प्रतिशत।"

उन्होंने एक शब्द नहीं कहा। वे मुस्कुराए। और चले गए।

ऐसे थे मेरे पिता। जिलेट के बेटों में से एक।

नांदो।

चोर

ज़्यादातर पाठक — ईमानदार पाठक — इस कोशिश की ओर खिंचेंगे कि समझा जाए कि चोर असल में क्या होता है, वह कैसे विकसित होता है, और एक ऐसी भूमिका के भीतर वह क्या दर्शाता है जो दरअसल कोई भूमिका है ही नहीं।

पर सावधान रहिए: मैं, किसी भी राजनीतिक विचारधारा से परे, इतालवी संसद के सदस्यों की सूची पेश नहीं कर रहा हूँ। मैं बस, दृष्टि और अनुभव के सहारे,

उन लोगों का वर्णन कर रहा हूँ जिन्होंने वह रेखा पार की और बिना फटे वापस लौट आने में कामयाब रहे, अब भी न्याय की ओर मुस्कुराते हुए।

वह किसी धंधे से जुड़ा नहीं है, न किसी पेशे से। क़ानून उसे "अपराधी" तक सीमित कर देता है, पर **चोर** शब्द, सीधे-सीधे कहा जाए तो, दुनिया की किसी भी क़ानूनी व्यवस्था की दंड संहिता में मौजूद नहीं है।

एक चोर का वचन।

जो बचता है वह एक कला है: चतुराई, ज़रूरत, अवसर, एक मोडस विवेंडी।

सबसे मशहूर आर्थिक और वित्तीय चोर हैं। कम जाने-पहचाने — और कहीं ज़्यादा ख़तरनाक — संज्ञानात्मक और भावनात्मक चोर हैं।

दोनों क़ीमत चुकाते हैं, पर रहस्य एक पुराने आपराधिक सिद्धांत में छिपा है: कृत्य करने से पहले, आपको पहले दोषी ढूँढना होता है और सबूत तैयार करना होता है। यही वे एकमात्र तत्व हैं जो आपको बच निकलने का एक संभावित — कभी निश्चित नहीं — रास्ता देते हैं। उसके बाद ही आप योजना बना सकते हैं।

एक इज़्ज़तदार चोर अपनी गुमनामी बनाए रखता है। वह कभी जेल नहीं जाता। वह पछताता नहीं। वह क़बूल नहीं करता। वह कुछ साझा नहीं करता। वह ऐसा ही पैदा हुआ था: मितभाषी।

लोग उसकी ओर खिंचते हैं। जो अप्रत्याशित होता है, वह हमेशा स्पष्ट से ज़्यादा बाँधता है, तब भी जब उसमें कोई बिना आँका गया जोखिम छिपा हो।

जब न्यायिक अधिकारियों का किसी ऐसे चोर से सामना होता है, तो वे उसकी तारीफ़ करते हैं। और पहली चीज़ जो वे खोजते हैं, वह तरीक़ा नहीं होती — वह तो जिज्ञासुओं के लिए है — बल्कि लूट का माल।

यहाँ भी किरदार की पहचान ख़ुद को उजागर कर देती है: कमाई को कभी अपनी सीमाओं के भीतर न रखें। और आज, सीमाएँ राष्ट्र नहीं रहीं — वे महाद्वीप हैं।

अप्रैल 2026 के एक यूरोपीय निर्देश ने आदेश दिया कि सभी बैंक आपस में जोड़े जाएँ और समुदाय के हर देश के कर-अधिकारी उनकी स्वचालित निगरानी करें। पहले चोरों ने उससे बहुत पहले ही तैयारी कर ली थी।

विकल्प के तौर पर बाक़ी महाद्वीप ही बचते हैं — एकमात्र जगह जहाँ किसी चोर के होने की अब भी कोई वजह है।

जहाँ तक कैथोलिक चर्च की बात है: उसने सदियों के दौरान सातवीं आज्ञा में बदलाव किया है, पर इसकी बात कोई कभी नहीं करता। पुराने नियम में, यह निषेध किसी स्वतंत्र इस्राएली का अपहरण करके उसे ग़ुलाम के रूप में बेचने से जुड़ा था। फिर यह चोरी पर एक सामान्य प्रतिबंध में बदल गया।

और जब अपराध संज्ञानात्मक क्षेत्र में खिसक गया, तो चिकित्सा साहित्य को एक शब्द गढ़ना पड़ा: **हेरफेर**।

देखते हैं साहित्य आगे क्या गढ़ता है। जहाँ तक मेरी बात है, मुझे उम्मीद है कि एक दिन मैं **साहित्यिक संज्ञानात्मक चोरी** के पहले आरोप के लिए मशहूर हो जाऊँगा।

नांदो

जिम

एक जोड़े को एक पतला धागा बाँधे रखता है। "होशियार लोग" कहते हैं: **पैसा और स्वार्थ**। बीमार मानसिकता वाले कहते हैं: **सेक्स**। जो सच में समझते हैं, वे कहते हैं: **जिम**।

क्यों? क्योंकि यही जवाब रिश्तों की 95% समस्याएँ हल कर देता है।

पैसा और स्वार्थ

वे तभी टिकते हैं जब देने के लिए और कुछ न हो। यह वरदान नहीं — एक सीमा है। आप ज़िंदगी 50% पर जीते हैं। बेहतर आधा हिस्सा हमेशा के लिए बंद रहता है।

सेक्स

पुरुष यांत्रिक होता है: उसे छूटना है, खोना है, ख़ाली होना है। स्त्री संज्ञानात्मक होती है: वह अपने शरीर को एक गुप्त कोड की तरह पढ़ती है। वह त्याग नहीं करती, समर्पण नहीं करती, ढहती नहीं। वह चुनती है।

दिलचस्प हिस्सा

एक जोड़ा कुछ इस तरह जन्म लेता है:

वह सोचता है: "मैं उसका पहला हूँ, उसका सबसे अच्छा, उसका इकलौता। मैंने उसे अपना दीवाना बना दिया। मैं टिका रहूँगा। मेरी माँ ने मुझे औरतों के बारे में सब कुछ नहीं बताया, पर मैं सँभाल लूँगा।"

वह सोचती है: "अच्छा है। उम्मीद करें कि यही आख़िरी हो। मैं इसे सुधार लूँगी। यह बहुत होशियार नहीं है — फ़ायदा। यह मर्द है: आख़िरकार मेरे कंधे पर रोएगा।"

सुबह का सच

वह आईने के सामने नग्न खड़ी है। वह अपने शरीर का हर इंच किसी निजी राज्य की तरह जानती है। उसे एक सेंटीमीटर ज़्यादा दिखता है, एक खिसकता हुआ घुमाव, एक स्तन जो घुटनों की ओर नज़रें झुका रहा है। और वह समझ जाती है: **उसका शरीर उसका अतिरिक्त मूल्य है, उसका हथियार, उसकी कूटनीति।**

तो, वह जिम जाती है।

पर चूँकि वह संज्ञानात्मक है, वह शुरुआत उस पर भड़ास निकालकर करती है:

"पता है, कल रात तुम वह आदमी नहीं थे जिससे मैंने शादी की थी। तीन मिनट में तुम सो गए। तुम खर्राटे ले रहे थे। तुम्हारी तोंद निकल आई है। और तुमने अपने दोस्त को दो साल से देखा नहीं है।"

बारह सेकंड बाद वह घबरा जाता है। "मुझे क्या करना चाहिए?"

वह जवाब देती है: "तुम जिम चल रहे हो। मैं भी आऊँगी। तो, तुम बोर नहीं होगे।"

और यहीं से आती है समस्या

जिम कोई जगह नहीं है। वह एक इकोसिस्टम है। और इकोसिस्टम **ग़लत संगत** को खींच लाते हैं। वह संगत जो एक आदमी को चोर बना देती है। और चोरों के बीच, ईमानदार लोग नहीं बचते।

फिर आते हैं विश्वासघात। और उनकी क़ीमत मासिक फ़ीस से कहीं ज़्यादा होती है।

बाक़ी सब जानते हैं। उसे सुनाना बस घाव खोलना है। और यह लेखक घाव नहीं खोलता: वह मुस्कानें देता है, विचार देता है, और कड़वाहट की वह एक बूँद जिसे आप कभी नहीं भूलते।

नांदो

वर्ष 2025

ट्रेन और अप्रत्याशित मदद

फ़्लोरेंस में मैं ट्रेन से उतरा और एक बेंच पर बैठ गया। मुझे सोचने के लिए समय चाहिए था।

पटरियों पर छलाँग लगा देना तकनीकी रूप से संभव था। फिर भी, उससे रेल लाइन पर ख़ून रह जाता। किसी को उसे साफ़ करना पड़ता।

इटली में तो वे सफ़ाई का पैसा भी आपसे वसूल सकते हैं।

इसके अलावा, मैंने ख़ुद को खोया नहीं था। आत्महत्या उनकी होती है जो अपने संज्ञानात्मक संदर्भ-बिंदु खो देते हैं। मेरे संदर्भ-बिंदु अब भी सही-सलामत थे।

इसी बीच, स्टेशन पार करती एक ख़ूबसूरत औरत को देखकर मुझे ज़िंदगी याद आ गई। उसने मुझे उन ढेरों अनुभवों की भी याद दिलाई जो मैं पहले ही जी चुका था।

थोड़ी देर बाद, मैं स्टेशन के कैफ़े में गया और एक फ़ोन करने की इजाज़त माँगी। मैंने अपनी पत्नी को फ़ोन किया और उसे अपना फ़ैसला समझाया।

मैंने उसे बताया कि मैं हमारे बेटों से मिलने **वेनिस** जाऊँगा। मैंने पहुँचने का ठीक-ठीक समय भी बता दिया।

फ़ैसला तार्किक और विवेकपूर्ण लगा।

मेरे बच्चे उस परिवार का स्वाभाविक विस्तार थे — और आज भी हैं — जिसे मैंने बनाया था।

जब मैं ट्रेन में लौटा, टिकट निरीक्षक मेरे पास आया। दुर्भाग्य से, मेरे पास टिकट नहीं था।

उसने कहा कि मुझे अगले स्टॉप पर ट्रेन से उतरना होगा। वरना वह रेलवे पुलिस को बुला लेगा।

उस पल मैंने तीन औज़ार इस्तेमाल किए: **क्षमता, रचनात्मकता और समाधान**।

मैंने शांति से समझाया कि मुझे ज़बरदस्ती ट्रेन से उतारने से इससे बड़ी समस्या खड़ी हो सकती है। मैंने उससे कहा कि मैं पटरियों पर कूद सकता हूँ और ट्रेन को घंटों के लिए रोक सकता हूँ।

वह अचानक चुप हो गया।

फिर मैंने पूछा कि अगले स्टेशन तक पहुँचने में कितना समय लगेगा।

"कम से कम एक घंटा," उसने जवाब दिया।

उस एक घंटे में कुछ अप्रत्याशित हुआ।

मेरे सामने टस्कनी की दो महिलाएँ बैठी थीं। मैं तुरंत समझ गया कि वे विश्वविद्यालय की प्रोफ़ेसर हैं और किसी सम्मेलन में जा रही हैं।

शुरू में हमने बस साधारण-सी बातें कीं। लेकिन जल्द ही दूरी की जगह जिज्ञासा ने ले ली।

लगभग तीस मिनट बाद उनमें से एक लौटी।

उसके हाथ में ट्रेन का एक टिकट था।

मेरा टिकट।

एक बार फिर, औरतें मेरा अनपेक्षित सौभाग्य बनीं। मैंने इस सच्चाई से कभी इनकार नहीं किया।

जिस मनुष्य को स्त्री कहते हैं, उसमें एक ऐसी गहराई होती है जिसे बहुत कम लोग पूरी तरह समझ पाते हैं।

ट्रेन से उतरने से पहले उसने मुझे अपना ईमेल पता दिया। मैं बाद में पैसे लौटाना चाहता था।

लेकिन ज़िंदगी आगे बढ़ती रही और ऐसा कभी हुआ नहीं।

वेनिस और दूसरी रवानगी

आख़िरकार ट्रेन **वेनिस** पहुँची।

दूर से मैंने अपने बेटों को देखा।

विंचेंज़ो, 193 सेमी। फ़्रांचेस्को, 188 सेमी।

गलियारे में वे भीड़ से ऊँचे खड़े थे।

वे मुझे घर ले जाने और फिर से मेरी जगह पर लाने आए थे।

जल्द ही उन्होंने बुनियादी स्थिरता फिर से पाने में मेरी मदद की। मैंने नहाया, साफ़ कपड़े पहने, खाना खाया और आराम किया।

उसके बाद सवाल शुरू हुए। बहुत सारे सवाल।

वे सचमुच अपनी माँ के बेटे हैं।

चार महीने बाद, **27 जून** को, एक और फ़ैसला सामने आया। परिवार की पुरानी सहज प्रवृत्ति ने मुझे पीछे खींचने की कोशिश की।

वे चाहते थे कि मैं अपने पुराने पेशे में लौट जाऊँ।

मैनेजर।

नांदो

अगली कड़ी

लेकिन मैं पीछे नहीं जाता।

कभी नहीं गया।

इसके बजाय, मैं आगे बढ़कर विफलता का सामना करता हूँ।

बचे हुए बेहद थोड़े पैसों से मैंने हवाई जहाज़ का एक टिकट ख़रीदा।

मंज़िल: **पुर्तगाल**।

मेरे पास कोई ठोस योजना नहीं थी।

फिर भी, मुझे पता था कि कैसे आगे बढ़ना है।

लिस्बन और हर चीज़ की शुरुआत

पहले मैं **पोर्टो** पहुँचा। उस हॉस्टल में चौबीस लोग एक ही जगह में सोते थे।

मेरे साधन लगभग ख़त्म हो चुके थे।

इसलिए मैं दक्षिण की ओर चला गया, जहाँ ज़िंदगी सस्ती है। मैं लगभग पाँच सौ किलोमीटर दूर **बेजा** पहुँचा।

लेकिन एक रात के बाद मैं **लिस्बन** लौट आया।

3 जुलाई को आख़िरकार मुझे एक बिस्तर मिला।

साझा कमरा। साझा अपार्टमेंट।

पैंतीस वर्ग मीटर में नौ लोग रहते हैं।

अलग-अलग संस्कृतियाँ और भाषाएँ उस जगह को भरती थीं।

वहाँ के हालात किसी आधुनिक घर से ज़्यादा किसी अफ़्रीकी झोपड़ी जैसे लगते थे।

ख़र्च था **230 यूरो प्रति माह, साथ में 100 यूरो की जमा राशि**। मैंने सब कुछ चुका दिया।

उस भुगतान के बाद मेरे पास कोई पैसा नहीं बचा।

खाना नहीं।

बस सोने की एक जगह।

फिर भी, वह दौर बेहद ज़रूरी साबित हुआ। उसे तीन बिंदुओं में समेटा जा सकता है:

क) **बीस किलोग्राम** वज़न घटाना और अपना खान-पान पूरी तरह बदल देना; ख) सिर्फ़ **सत्तर यूरो प्रति माह** में ज़िंदा रहना; ग) संपादकीय परियोजनाओं को आकार देना, कम से कम मसौदों के रूप में।

मैं वहाँ **22 नवंबर, 2025** तक रहा।

आख़िरकार मैंने इटली लौटने का फ़ैसला किया। कुछ आश्वासनों से लग रहा था कि शायद अब जाकर टिकाऊ हालात बन सकते हैं।

मुझे उम्मीद थी कि बात बन जाएगी।

फिर भी, ज़रूरत पड़ने पर मैं फिर से निकल जाने को तैयार रहा।

फिर कुछ असाधारण हुआ।

9 दिसंबर से 26 दिसंबर तक, सिर्फ़ **17 दिनों** में, सब कुछ बदल गया।

पिछले तीन साल अचानक तैयारी बन गए।

अब दुनिया मुझे देख सकती थी।

और मैं आख़िरकार उन्हें देख सकता था।

कोई बिचौलिया नहीं।

प्रक्रिया को नियंत्रित करने वाला कोई प्लेटफ़ॉर्म नहीं।

मैं अपने कर्म के भीतर आज़ाद रहता हूँ।

मैं वही रहता हूँ जो मैं हूँ।

क्रिसमस की शुभकामनाएँ। पापा।

लेखक का चिंतन

2025 को पीछे मुड़कर देखता हूँ तो मुझे अब उसमें टूटन का साल नहीं दिखता। इसके बजाय, मुझे स्पष्टता का साल दिखता है।

ख़ाली हाथ निकलने ने मुझे मजबूर किया कि मैं स्वामित्व और पहचान के बीच की दूरी नापूँ। पैसा, आराम और निश्चितता जल्दी ही ग़ायब हो गए। लेकिन उनसे

ज़्यादा मज़बूत कुछ बचा रहा।

जब बाक़ी सब ढह जाता है, तब भी पहचान बची रहती है।

उन अस्थिर महीनों ने एक छलनी का काम किया। भ्रम ग़ायब हो गए। अपेक्षाएँ घुल गईं। उधार की भूमिकाएँ आख़िरकार झड़ गईं।

जो बचा, वही ज़रूरी था।

आज़ादी।

इसके बाद आई परियोजनाएँ किसी रणनीति से नहीं निकलीं। बल्कि वे ज़रूरत से उपजीं।

अंत में, उस साल ने कुछ भी नष्ट नहीं किया।

उसने वही उजागर किया जो पहले से वहाँ था।

क्यूबाइयों को पढ़ाना

जब मैं मियामी उतरा, मुझे पहले से पता था कि उस शहर में ज़्यादा कुछ "अमेरिकी" नहीं बचा है। वह जगह बेहतर एयर-कंडीशनिंग वाला क्यूबा थी। मुझे लेने आया टैक्सी ड्राइवर क्यूबाई था, ज़ाहिर है। सबसे पहले वह पूछता है: क्या मैं अकेला हूँ और क्या मुझे किसी का साथ चाहिए। न सुपरमार्केट, न शॉपिंग मॉल, न पोस्टकार्ड वाला अमेरिका। बिल्कुल दूसरी दुनिया।

उस पहली शाम, जब मैं घर पर अकेला था, किसी ने दरवाज़ा खटखटाया। पुलिस। उन्होंने मुझे चौंका दिया, लेकिन वे कोई परेशानी खड़ी करने नहीं आए थे। वे मुझे यह बताने आए थे कि अगली सुबह अमेरिकी वाणिज्य दूतावास में मेरी एक मुलाक़ात तय है। ठीक साढ़े दस बजे।

अगले दिन मैं समय पर पहुँचा। पचासेक साल के एक आदमी ने दरवाज़ा खोला और बताया कि मैं जल्द ही सलाहकार से मिलूँगा। फिर वह सामने आई: लंबी, दुबली, सुनहरे बालों वाली, सुरुचिपूर्ण, हर तरह से सजी-सँवरी। उसने मुझसे हाथ मिलाया और याद दिलाया कि हम बरसों पहले रोम में मिले थे, जब वह शिक्षा मंत्रालय में पहली कार्यकारी निदेशक के रूप में काम करती थी।

"बेशक, मुझे आप याद हैं। आप कैसी हैं?" मैंने कहा, उसे फिर से देखकर सचमुच ख़ुश होते हुए।

उस पल के बाद से रोम में कोई कभी नहीं समझ पाया कि मैंने तनख़्वाह के बारे में पूछे बिना ही उसका प्रस्ताव क्यों ठुकरा दिया। वह एक बड़ा प्रस्ताव था, गंभीर प्रस्ताव — मेरे जैसे सीधे-सादे आदमी के लिए कुछ ज़्यादा ही गंभीर, पैसे से परे, महत्वाकांक्षा से परे।

"मैं चाहती हूँ कि आप कम से कम 30 दिन युवा क्यूबाई मैनेजरों के लिए एक प्रशिक्षण और संचार परियोजना पर काम करें। आपको वह सब मिलेगा जो आप चाहेंगे, और उससे भी ज़्यादा। कृपया, मना मत कीजिए।"

कक्षाएँ 10 से 12 बजे तक चलनी थीं, फिर 2 से 5 बजे तक।

मुझे पहला पाठ याद है: लगभग पचास लोग, आधे पुरुष, आधी महिलाएँ, सभी पेशेवर। सामान्य परिचय के बाद — नाम, उपनाम और उम्र ज़ोर से बोलकर — मैंने क्यूबाई चुटकुले सुनाकर अपनी स्पेनिश को गरमाना शुरू किया। सब जानना चाहते थे कि मैं क्यूबा के किस हिस्से से आया हूँ।

सोचने का पहला असली पल तब आया जब मैंने *पढ़ाने* और *संवाद करने* के बीच का फ़र्क़ रेखांकित किया — एक ऐसी बात जिसे कई इतालवी समझते तक नहीं।

दिन उड़ते चले गए, और आख़िर में सब कुछ एक केक के साथ ख़त्म हुआ जो छात्रों ने मेरे लिए बनाया था। वे साथ बिताए उन 30 दिनों से ख़ुश थे। हर कोई मेरा फ़ोन नंबर चाहता था। वे हैरान थे कि मैं न शराब पीता था, न सिगरेट पीता था, न ड्रग्स लेता था।

जवानी में मैं रग्बी खिलाड़ी रहा था — एक खिलाड़ी की मानसिकता। इस बीच, इतालवी सलाहकार ने मुझे जश्न मनाने के लिए डिनर पर बुलाया, और आख़िरकार यह समझने के लिए कि उससे क्या छूटता रहा था। लोग मुझसे इतना जुड़ गए थे कि वे मुझे बस भूल ही नहीं पाते थे।

मैं एक भाग्यशाली आदमी हूँ, मेरे सामने हमेशा दो संभावनाएँ होती हैं: पहली, एक शानदार औरत जो 30 दिनों की चुप्पी के बाद मुझे डिनर पर बुला रही है;

दूसरी, मेरी नियति की आवाज़ जो मुझसे कह रही है कि जाने का समय आ गया है।

एक रस्मी चुंबन, एक अलविदा, और वह मुझसे पूछती है: "कहाँ जा रहे हैं? मुझे अकेला छोड़कर जा रहे हैं?"

उसे विदा का चुंबन दिया। चला गया। और कभी मुड़कर नहीं देखा। आज़ादी की क़ीमत मुझे हमेशा आराम से ज़्यादा चुकानी पड़ी है।

नांदो

केले

सीखा हुआ सबक

ज़िंदगी के तीसरे दौर में मेरी नई खान-पान की दिनचर्या में सुबह केले शामिल हैं। जब वे पिछली रात ही ख़त्म हो जाते हैं, तो अगला दिन एक ख़ालीपन से शुरू होता है।

2025 में दिसंबर की एक सुबह मैं अपने घर के नीचे वाले फलवाले के पास गया। मैं उसे पैंतालीस साल से भी ज़्यादा समय से जानता हूँ। उसने मेरा अभिवादन किया, "फिर से स्वागत है" कहा, और पूछा कि मुझे क्या चाहिए।

— केले। अगर पके हुए हों, भले ही सस्ते वाले, तो मुझे वही पसंद हैं। — नहीं, मैं आपको सिर्फ़ ये दे सकता हूँ — उसने जवाब दिया।

दाम: €1.45 प्रति किलो। हरे या पीले, मेरी मर्ज़ी।

मैंने €5 का एक थैला माँगा। मेरे साथ मेरा कुत्ता था, और यहाँ कुत्ते के साथ दुकान में घुसना आज भी वर्जित माना जाता है।

घर लौटकर, जिज्ञासा ने — जो ग़रीबी में बीते बचपन की बेटी है — मुझे थैला तौलने के लिए उकसाया। 2.752 किलो। मुझे €3.99 देने चाहिए थे। बाक़ी बचे यूरो का किसी ने ज़िक्र तक नहीं किया था।

मैं एक भला आदमी हूँ। सहनशील। मैंने सोचा कि यह कोई ग़लती थी। लेकिन जब कोई शक पैदा होता है, तो उसकी जाँच ज़रूरी है।

तीन दिन बाद मैं फिर गया। वही दिनचर्या। कुत्ता भी साथ।

— €1 के केले। उसने मुझे चार छोटे केले दिए।

आइसक्रीम की दुकान वाला मेरा दोस्त अपना तराज़ू लिए इंतज़ार कर रहा था। 0.456 किलो। असली क़ीमत: €0.66। न लौटाए गए छुट्टे: €0.34।

पहली घटना एक शक थी। दूसरी, जाँच। निश्चितता तक पहुँचने के लिए मुझे तीसरी की ज़रूरत थी।

उसी दोपहर मैं फिर लौटा। वही दृश्य। फिर से €5 दिए।

इस बार मेरा शिपिंग एजेंट दोस्त इंतज़ार कर रहा था। पेशेवर तराज़ू। 2.90 किलो। असली क़ीमत: €4.20। उसने €5 लिए। फिर भी कोई छुट्टा नहीं।

दिन बीतते गए। मुझे उस आदमी, हालात और माहौल, सब पर सोचना था। सीधा टकराव मेरे परिवार के लिए मुसीबतें खड़ी कर सकता था। कुछ लोग शब्दों से जवाब नहीं देते।

लेकिन मेरा नाम फ्रेगा है। और लूटे जाना मेरी फ़ितरत में शामिल नहीं है।

मेरे बदले ने एक दूसरा रूप लिया।

पाँच दिन बाद मैं बिना कुत्ते के लौटा। मैंने मालिक के बारे में पूछा — पिता, जो मुझसे कुछ साल बड़ा था।

— सुनिए, मेरे दोस्त ने कहा कि पिछली बार केले कुछ ज़्यादा ही लग रहे थे। मैंने उन्हें घर पर तौला: 3.90 किलो। लिखे हुए दाम के हिसाब से मुझे €5.65 देने चाहिए थे। आपने सिर्फ़ €5 लिए। मैं फ़र्क़ चुकाने आया हूँ।

और मैंने €0.65 उसकी ओर बढ़ाए, इस तरह कि साफ़ दिखें।

— बशर्ते वह कोई छूट न रही हो, क्योंकि हम एक-दूसरे को चालीस साल से जानते हैं।

उसकी आँखें फैल गईं। उसकी पत्नी और बच्चे जड़ हो गए। अनुभव ने उसे बचा लिया।

— छूट ही थी — उसने कहा — एक ख़ास ग्राहक के लिए।

मैंने सिक्के वापस जेब में रख लिए।

— शुक्रिया — मैंने जवाब दिया। — लेकिन अब मैं यहाँ से ख़रीदारी नहीं करूँगा। "ख़ास ग्राहक" वाली ये मेहरबानियाँ मुझे मुश्किल में डाल देती हैं। मेरे पास इनकी कोई वजह नहीं है। कोई औचित्य नहीं। फिर भी शुक्रिया।

वह एक शब्द भी नहीं बोल पाया। वह सब कुछ समझ चुका था।

अगले दिनों में मैं दुकान के सामने से गुज़रा। कोई टिप्पणी नहीं। सिर्फ़ झुकी हुई नज़रें। उन नज़रों ने वह कह दिया जो कहने की हिम्मत वे कभी नहीं जुटा पाए: माफ़ कीजिए।

सीख सीधी है: एक नकारात्मक घटना से हमेशा एक सकारात्मक घटना निकाली जा सकती है। मेरी कामयाबियाँ ऐसे ही काम करती हैं।

मैं ऐसा ही हूँ। और मैं अब भी केले खाता हूँ।

नांदो

अगली कड़ी

सुबह के 3:23 बजे थे। ठंडी रात। ख़ामोश। इंटरकॉम बजा। सब जाग गए।

मेरी बेटी फुसफुसाई: "वे आपको गिरफ़्तार करने आए हैं। आपकी ट्रॉली तो हमेशा आपके बेडरूम के दरवाज़े के पीछे तैयार रहती है।"

उसे मेरी कहानी पर यक़ीन नहीं था। उसने सच पढ़ा ही नहीं था। उसे मुझ पर भरोसा नहीं था। मैं विश्वसनीय तक नहीं था। उसने सिर्फ़ शब्दों का अर्थ लगाया था। और असली दर्द यही था।

मैंने इंटरकॉम उठाया। एक आवाज़ ने कहा: "इस वक़्त के लिए माफ़ कीजिए, लेकिन मुझे आपसे बात करनी है। मैं आपके घर के पास वाला फलवाला हूँ।"

मैंने उसे अंदर आने दिया। वह लगभग अस्सी साल का था। जब तक मैंने अपना ड्रेसिंग गाउन पहना, वह घर के सबसे बड़े कमरे में बैठ चुका था। बैठक में।

वह भावनात्मक रूप से टूट चुका था। आँसुओं में डूबा हुआ। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि कहाँ से शुरू करूँ।

उसने एक ही बात माँगी: "जब मैं बोलना शुरू करूँ, तो कृपया मुझे टोकिएगा नहीं।"

मैंने नहीं टोका।

"कल रात हमारे बीच वह वाक़या हुआ था। आपको याद है। आप केलों के लिए मुझे पैंसठ सेंट देना चाहते थे, और मैंने आपको छूट दे दी।"

"याद है," मैंने कहा।

"आपके जाने के बाद मैं अपने परिवार के साथ मेज़ पर बैठा। आपने मुझे जो सबक दिया, वह कड़ा था। मेरे लिए। मेरी उम्र के आदमी के लिए।"

"मैं बस इतना जानना चाहता हूँ कि क्या आप मुझे माफ़ करते हैं। और आपसे माफ़ी माँगना चाहता हूँ।"

उसके हाथ में कपड़े का एक रूमाल था, जिससे वह एक आँसू पोंछ रहा था जो बार-बार लौट आता था।

"इस वक़्त के लिए माफ़ कीजिए। आपसे मिले बिना मुझे नींद नहीं आ सकती थी। और आपको ढूँढना आसान नहीं था। हमने ऑनलाइन आपका नाम खोजा। तीन वेबसाइटें सामने आईं। सब अंग्रेज़ी में। हमें समझ नहीं आता कि उनमें क्या लिखा है। वे कुछ बेचती नहीं। वे कुछ माँगती नहीं। हमें समझ नहीं आता कि वे साइटें आख़िर हैं क्या।"

वह हँस पड़ा।

मैं खड़ा हुआ। उससे भी खड़े होने को कहा। मैंने उसे कसकर गले लगा लिया।

मैंने उससे कहा कि मैं कोई प्रोफ़ेसर नहीं हूँ। कोई शिक्षक नहीं। मैं किसी को सबक नहीं दे सकता। मैंने तो बस एक पिता की सामान्य समझ लागू की थी, जहाँ नियम और सिद्धांत किसी भी आर्थिक तर्क से पहले आते हैं।

जाते हुए उसने पूछा कि क्या मैं उसकी दुकान पर फिर आऊँगा। मैंने जवाब दिया:

"अतीत सिखाता है। वर्तमान कभी भुलाया नहीं जाता। भविष्य हमारे सपनों में बसता है, जहाँ हम देखते हैं कि हम क्या बनना चाहते हैं।"

"मैं भविष्य से आगे हूँ। क्योंकि मैं पीढ़ियों तक चलने वाली दौलत बना रहा हूँ, विरासत में छोड़ने के लिए अधकचरी चीज़ें नहीं।"

वह ठीक से समझ नहीं पाया कि मेरा मतलब क्या था। वह मेरा संज्ञानात्मक पहलू था — वह, जिसमें चंद शब्दों के भीतर कुछ भी नहीं होता, लेकिन अगर ध्यान से सुनो, तो सब कुछ होता है।

नांदो

मौत के दरवाज़े पर

एक ऐसा पल जब आदमी समझ जाता है कि ज़िंदगी उसके लिए पहले ही चुन चुकी है।

निदान

जब भी मैं कोई जी हुई कहानी सुनाता हूँ, पहले मुस्कुराता हूँ और फिर सोचता हूँ कि मैं उससे बचकर कैसे निकला। हालात तर्कहीन थे, लगभग अवास्तविक। फिर भी उन्होंने मेरी ज़िंदगी को आकार दिया, और इसलिए मुझे इसे सुनाना ज़रूरी लगता है।

जनवरी 2007। मैं एक क्लिनिकल लैबोरेटरी के बाहर सर्जरी के नतीजों का इंतज़ार कर रहा हूँ। सिर्फ़ तीस दिनों के अंतर पर हुए दो ऑपरेशनों के बाद मेरी छोटी आँत से सात कार्सिनॉयड निकाले गए थे।

एक सफ़ाईकर्मी महिला, जिसे मैं शक्ल से पहचानता था, चुपचाप मेरे पास आई।

"मुझे अफ़सोस है," उसने कहा। "मैंने सुना... घातक ट्यूमर। आपको ऑन्कोलॉजिस्ट से मिलना चाहिए।"

उस पल मौत सबसे नज़दीकी संभावना बनकर सामने आई। लेकिन विवेक ने जल्दी ही दख़ल दिया।

मैंने अपनी दिव्यांग बेटी के बारे में सोचा। भाग निकलना अब कोई विकल्प नहीं था। इसलिए मुझे ज़िंदा रहना था, उसका वर्तमान बनाना था और उसके भविष्य की रक्षा करनी थी।

जल्द ही ऑन्कोलॉजिस्ट ने सब कुछ पक्का कर दिया: न्यूरोएंडोक्राइन ट्यूमर, जीवन-प्रत्याशा लगभग तीस दिन।

उन शब्दों को मन में लिए मैं एक सुनसान समुद्र-तट पर चलता रहा। इस बीच हवा मेरे चेहरे से टकरा रही थी, और लहरें कुछ फुसफुसा रही थीं जो मैं अभी समझ नहीं पा रहा था।

फ़ैसला

28 जनवरी।

मैं पुराने दोस्तों और पूर्व ग्राहकों की तलाश में गाड़ी चलाकर नेपल्स गया। मुझे पैसों और एक नई शुरुआत की ज़रूरत थी। लेकिन किसी ने एक यूरो भी नहीं लगाया।

इसके बजाय, उन्होंने बस रेस्तराँ में डिनर करवाए।

कुछ दिनों बाद, 6 फ़रवरी को, मैं नेपल्स में था, जेब में सिर्फ़ 275 यूरो और कोई क्रेडिट कार्ड नहीं। निदान के मुताबिक़, पंद्रह या बीस दिन बचे थे।

हाईवे के निकास पर मुझे चुनना था: दक्षिण या उत्तर।

तभी मेरी पत्नी का फ़ोन आया।

"घर आ जाओ।"

उसे लगता था कि वह डिप्रेशन से बात कर रही है। लेकिन वह यह नहीं देख पा रही थी कि मेरे शरीर के भीतर हार्मोन का तूफ़ान क्या कर रहा था।

तो मैंने उत्तर चुना।

रोमानिया

दो दिन बाद मैं रोमानिया के ब्रासोव पहुँचा — ड्रैकुला का इलाक़ा।

यह सफ़र किसी औरत की ख़ातिर नहीं था। बल्कि, वह विशुद्ध अंतःप्रेरणा थी।

मेरी जेब में बीस यूरो बचे थे। मरने के लिए काफ़ी। सब कुछ फिर से खड़ा करने के लिए तो हरगिज़ नहीं।

फिर भी, मैंने सब कुछ फिर से खड़ा करने का फ़ैसला किया।

एक कैफ़े में मैंने कैपुचीनो और कॉर्नेटो मँगाया। मैंने फ़ौरन ग़ौर किया कि रोमानियाई औरतों में एक दुर्लभ सुंदरता थी। लेकिन वहाँ के मर्दों में अक्सर शिष्टता की कमी थी।

वेट्रेस समझ गई कि मेरे पास छुट्टे नहीं हैं। मुझे भगाने के बजाय उसने मेरी बात सुनी। हम तीन घंटे बात करते रहे।

आख़िर में वह रो पड़ी और उसने मुझे पैसे तक देने चाहे।

मैंने मना कर दिया।

इसके बजाय, मैंने एक सवाल पूछा:

"कसीनो कहाँ है?"

उलझन में पड़ी उसने सड़क के आगे की ओर इशारा किया।

मैं बीस यूरो लेकर अंदर गया। सुबह पाँच बजे तक, मैं चार सौ पचास लेकर निकला।

नांदो

अगली कड़ी

पुनर्निर्माण

जल्द ही मैंने 280 यूरो में चौथी मंज़िल पर एक अपार्टमेंट किराये पर ले लिया। वेट्रेस ने भुगतान की गारंटी दी।

दोपहर में मैं मेट्रो स्टेशनों पर काम करने वाली कई लड़कियों से मिला। इस बीच मैंने दोस्तियाँ बनानी शुरू कर दीं।

फिर राशन की ख़रीदारी हुई। काउंटर पर एक सौ पचास यूरो का खाने का सामान आ गया। लेकिन मैंने सिर्फ़ बारह दिए। टूना आधी मुफ़्त थी, और कसाई ने मुझे गोश्त तोहफ़े में दे दिया।

कसीनो मेरा रात का बैंक बन गया। इस बीच मेरा अपार्टमेंट धीरे-धीरे मिलने-जुलने की जगह में बदल गया।

मेज़ पर बारी-बारी से कैलाब्रियाई ज़ायके सजते रहे। कहानियाँ घूमती रहीं। और ज़िंदगी चुपचाप फिर से शुरू हो गई।

एक वापसी जो कभी नहीं हुई

दिसंबर 2007।

मौत मुझे भूल चुकी थी।

मेरी पत्नी ने फिर फ़ोन किया।

"फ़ौरन घर आओ।"

मेरे पास बारह यूरो बचे थे। लेकिन एक एयरलाइन वाउचर की बदौलत मैं बुखारेस्ट से निकल सका।

रेज्जो कैलाब्रिया जाने वाली उड़ान बीच हवा में ही गड़बड़ा गई। उसकी जगह हमें ज़्यूरिख मोड़ दिया गया।

एयरपोर्ट पर मैंने फिर से जुगाड़ लगाया। ब्रिटिश लाउंज में मैंने कतार वाले खंभे को माइक्रोफ़ोन की तरह थाम लिया और गाना शुरू कर दिया।

होस्टेस हँस पड़ीं।

थोड़ी ही देर बाद उन्होंने मुझे लंदन की एक फ़्लाइट दे दी — ऊपर से एक सौ पाउंड।

लंदन, पेरिस, रोम, नेपल्स।

हर कदम पर कुछ ईजाद करना पड़ता था। हर पल हिम्मत माँगता था।

आख़िरकार सात दिन बाद मैं घर पहुँचा।

उसके बाद

मेरी पत्नी आगबबूला थी।

"कहाँ थे तुम? अपनी लड़कियों के साथ?"

मैं मुस्कुराया।

"अच्छा है कि वे हैं," मैंने कहा। "वरना मैं अब भी ज़्यूरिख में फँसा होता।"

जल्द ही मैंने नया काम शुरू किया: अस्थायी कर्मचारियों की एक एजेंसी, निर्माण, और सुरक्षा सेवाएँ। छह कर्मचारियों से परियोजना शुरू हुई। हर महीने मुनाफ़ा फिर से निवेश किया जाता था।

लेकिन कम ही लोगों को इस पर भरोसा था।

पतन

2008 में मैं रोमानिया लौटा।

एजेंसी बढ़कर 258 यूरोपीय कर्मचारियों तक पहुँच गई। निर्माण का काम एक इतालवी बहुराष्ट्रीय कंपनी के साथ मिलकर होता था। इस बीच सुरक्षा विभाग एटॉमिक वेल्डिंग में काम करता था।

मैंने रोमानियाई सीखी, पढ़ी, लिखी और बोली। कहानियों और चुटकुलों ने हर दरवाज़ा खोल दिया।

फिर, दिसंबर में, मैंने सब कुछ दूसरों को दे दिया और चला गया।

औरतों ने विरोध किया।

"तुम्हारे बिना कुछ नहीं टिकेगा।"

तीन महीने बाद सब कुछ ढह गया।

क्यों?

क्योंकि भूख किसी और को सौंपी नहीं जा सकती। अनुभव हस्तांतरित नहीं किया जा सकता। और काम के प्रति निष्ठा तोहफ़े में नहीं दी जा सकती।

असली सबक

बिना पैसे वाला इतालवी, जिसे रोमानियाई औरतों का सहारा हो — यह किसी सपने जैसा लग सकता है।

लेकिन हक़ीक़त कुछ ज़्यादा कठोर सिखाती है।

सच्ची भूख सिर्फ़ उन्हीं के लिए तालियाँ बजाती है जो उसे अपने भीतर लिए चलते हैं।

अंतिम टिप्पणी

जब मैं पैदा हुआ, तो उन्होंने मुझे मेरे जैसा ही एक उपनाम दिया — **फ्रेगा** — एक ऐसा नाम जिसे अक्सर चोरों और ठगों से जोड़ा जाता है।

इकसठ साल से मैं इसका उल्टा साबित करने की कोशिश करता आया हूँ।

क्योंकि नाम हमें परिभाषित नहीं करते।

बल्कि ब्रांड करते हैं।

और ब्रांड सिर्फ़ कर्मों से बनता है।

नांदो

बिना अंडरवियर

कल का दिन थकाने वाला रहा था, लेकिन मसले सुलझाने वाला भी — हमेशा की तरह। मैंने कभी अपना समय बेमक़सद बर्बाद नहीं किया: मेरा संज्ञानात्मक समय सख़्त नियमों पर चलता है; स्त्रैण समय किसी नियम पर नहीं।

और फिर भी मैं अकेला सोने गया, क्योंकि मेरी पत्नी ने एक "पॉज़" लेने का फ़ैसला किया था। माफ़ कीजिए — *मेनोपॉज़*। मैं हँसा। वह नहीं हँसी।

मेरी बेटी ने यह याद दिलाने का मौक़ा नहीं छोड़ा कि 61 की उम्र में मैं "बूढ़ा" हो चुका हूँ, और यह कि अंतरंग मामलों में किसी औरत को सँभालने की न मुझमें ताक़त होगी, न हिम्मत — मैं ज़रूर ढेर हो जाऊँगा। वह मेरी बेटी है, मेरी ज़िंदगी। सब कुछ कहने के लिए एक मुस्कान काफ़ी थी। लेकिन मैं एक जुमला उछालने से ख़ुद को रोक नहीं पाया:

कई लोग इसे सिर्फ़ बाथरूम जाने के लिए इस्तेमाल करते हैं। कुछ हीरो बनने का दिखावा करते हैं। कुछ विचार पैदा करने के लिए। कुछ पहले पिता बनते हैं और फिर प्रेमी। और कुछ बस इसे देखते रहते हैं।

मैंने इसे फ़ुल-टाइम काम का औज़ार बना दिया है — और टैक्स स्रोत पर ही कट जाता है।

वह ठहाके मारकर हँस पड़ी, रुकने का नाम ही नहीं। दूसरे कमरे से मेरी पत्नी ने अपना वही पुराना फ़ैसला दोहराया: "तुम शैतान हो।" ठीक ही है।

सोने के लिए मैंने कपड़े उतारे — रात के 11 बजे थे। एक आरामदेह ट्रैकसूट पहना। हर रात की तरह दस मिनट फ़ोन पर, और फिर नींद।

सुबह लगभग 5 बजे कुछ खिसककर गिर गया। मुझे ठंड लग रही थी। मैंने नीचे अपनी पैंट और अंडरवियर की ओर हाथ बढ़ाया — दोनों ग़ायब।

यह किसने किया? न कोई पार्टी हुई थी, न मेहमान आए थे, न किसी को न्योता दिया गया था। तो फिर तिजोरी किसने खोली?

मैंने ध्यान से जाँचा कि ख़ानदानी गहने अब भी अपनी जगह पर और सही-सलामत हैं। फिर मैंने देखा कि मेरा "पुराना दोस्त" मुझसे पहले जाग चुका था, इस यक़ीन के साथ कि कोई काम करना है।

काम आया भी — लेकिन वैसा नहीं जैसा आप सोच रहे हैं। वैसा, जिसके लिए मैं जीता हूँ: **आपको एक सच्ची कहानी सुनाना और आपके चेहरे पर मुस्कान लाना।**

नांदो

एक रूसी औरत

जून 2006 — शुरुआत

मैं अपना थोक का कारोबार चला रहा था—होम-केयर, पर्सनल-केयर, बड़प्पन के भ्रम। मुझे लगता था कि मैं ताक़तवर हूँ। मैं बस घमंडी था।

जुलाई, रिमिनी। पूर्व सहकर्मियों, ग्राहकों, दोस्तों और औरतों से भरा एक व्यापार मेला। बहुत ज़्यादा औरतें। तभी मुझे समझ आया कि मेले होते क्यों हैं: आप कहते हैं "काम," लेकिन वह दूसरे कमरों में ग़ायब हो जाने का बस एक बहाना होता है।

होस्टेस के साथ मैंने कभी दुखी-पति वाली स्क्रिप्ट नहीं खेली। मेरा अंदाज़ नहीं। मैं हमेशा कहता था कि मैं अपनी पत्नी से प्यार करता हूँ, और वह मुझसे—क्योंकि मैं घर पैसे, अनुभव और बिना किसी संक्रामक सरप्राइज़ के लौटता था।

उस रात मैंने एक पेशेवर को बुलाया। उसके दो घंटे, साफ़-सुथरे, सीधे-सादे, कम जोखिम वाले। या कम से कम मैं ऐसा मानता था।

वह आई: सर्दियों के समुद्र जैसी सुंदर, बेमिसाल बदन, दमदार मौजूदगी। उसने फ़ौरन पैसे माँगे—वह कोई डॉक्टर नहीं थी; वह कुछ-कुछ पैरामेडिक जैसी थी।

मैंने उसकी बाँह थामी और उससे तैयार होने को कहा: मैं उसे शहर के सबसे अच्छे रेस्तराँ ले जा रहा था, और मैं उसके अगले 24 घंटे ख़रीदना चाहता था।

"मुझे कितना दोगे?" मेरी जेब में जो कुछ था, सब मैंने उसके हाथ में रख दिया। उसने गिनना शुरू किया, गिनती भूल गई, और समझ गई कि वह किसी और ही लीग में आ पहुँची है।

उसने पूछा कि क्या मुझे कोई लत है, कोई विकृति, कोई अजीब खेल। मैंने उससे कहा कि मैं खेल का पाला-पोसा आदमी हूँ, एक बहुराष्ट्रीय कंपनी में प्रशिक्षित, और ज़िंदगी का बिना लाइसेंस वाला दर्शक।

वह सहज हो गई। हम पैदल रेस्तराँ गए—उसने टैक्सी से मना कर दिया। उसने एक सहेली को भी साथ आने के लिए बुला लिया। मैं समझ गया: पराया देश, एहतियात। ठीक ही है।

डिनर शांत था, लगभग रोमांटिक, लेकिन मैं संज्ञानात्मक बना रहा। ख़ानदानी गहने उसके भरोसे छोड़ने से पहले मुझे जानना था कि वह कौन है।

घर लौटते ही उसने गलियारे में मुझ पर धावा बोल दिया। बिस्तर तक जाने का समय नहीं। हमने वह सब कुछ कर डाला जो ज़ाहिर था, और उससे आगे का भी सब कुछ।

आठ घंटे बाद मैं जा रहा था। उसने मुझसे न जाने को कहा। तो मैंने एक वादा किया: "साल ख़त्म होने से पहले मैं तुम्हें तुम्हारे परिवार से मिलाने रूस ले चलूँगा।" उसे मुझ पर यक़ीन नहीं हुआ। मैंने उसका ईमेल माँगा। उसने दे दिया।

नांदो

सेंट पीटर्सबर्ग — पतन

नवंबर 2006। मैंने उसे ईमेल किया: रूस के लिए उड़ान भरने को तैयार हूँ, अपने बैंक का ब्योरा भेजो। उसे अब भी मुझ पर यक़ीन नहीं था। तो, मैंने उसके परिवार को पैसे भेज दिए।

टिकट। वीज़ा। मिलान–सेंट पीटर्सबर्ग।

मालपेंसा पर उसने और पैसे माँगे। लहजा बदल गया — दोस्ताने से दबदबे वाला। मुझे यह अच्छा नहीं लगा।

उड़ान ख़ामोश रही। हवाई अड्डे पर उसकी माँ हमसे मिली। वे मुझे एक अपार्टमेंट में ले गईं। होटल की इजाज़त नहीं।

हम बाज़ार गए, खाने का सामान ख़रीदा, और परिवार के साथ डिनर किया। फिर वह चली गई। मैं अंदर बंद रह गया।

अगली सुबह, मैंने दरवाज़ा खोलने की कोशिश की। ताला लगा था। अपहरण नहीं — बस एक नियंत्रित घेराबंदी।

वह 11 बजे मुस्कुराती हुई आई। दोपहर को हमें शहर के बाहर एक दाचा में मेहमान बनना था।

उसकी सहेली और एक लड़का हमें लेने आए। हर तरफ़ बर्फ़। हम उसके पिता के केजीबी कर्नल के घर पहुँचे।

बातचीत मेरी अंग्रेज़ी के सहारे चली। विला शानदार था। बिडे का हत्था तक सोने का था।

हर व्यंजन नफ़ीस, हर पल के साथ एक अलग वाइन। फिर वे मुझे सौ मीटर दूर मर्दों के सॉना में ले गए। बाहर माइनस 20 डिग्री। सॉना के बाद हम बर्फ़ में नंगे खड़े रहे। एक रूसी परंपरा। मैंने नहीं पूछा कि आगे क्या होगा।

उस रात मैं अकेला सोया, माइक्रोफ़ोनों से भरे एक ख़ूबसूरत कमरे में। वह कहीं और सोई।

सुबह: कर्नल के साथ नाश्ता। फिर उसने मुझे अपनी कारें, अपनी मोटरसाइकिलें दिखाईं, और बगल में एक पग दबाए मुझे गाड़ी में दाचा के चारों ओर घुमाया।

दोपहर: सेंट पीटर्सबर्ग वापसी। शाम: उसने मुझ पर हावी होने की, मुझे क़ाबू में करने की कोशिश की। उसे अंदाज़ा तक नहीं था कि मैं कौन हूँ।

अगले दिन हम मुख्य एवेन्यू पर गाड़ी से घूमे — 20 किमी तक दुकानें, ब्रांड, दौलत। कोई ग़रीब शहर नहीं। सिर्फ़ मॉस्को से पीछे।

कर्नल के परिवार के साथ डिनर: बीस तरह का कैवियार, बेहिसाब खाना, प्रति व्यक्ति सौ डॉलर। फिर मेरी जेल में वापसी। उसने फिर से दरवाज़े पर ताला लगाया और चली गई।

अगले दिन वह लौटी। मैं एक पल के लिए बाहर निकला, टैक्सी ली, और भाग निकला — अपना सारा सामान पीछे छोड़कर।

वह पागलों की तरह फ़ोन करती रही। आख़िरकार मैंने फ़ोन उठाया: "मैं हवाई अड्डे पर हूँ।" वह अपनी माँ के साथ आ पहुँची। पुलिस में मेरी शिकायत करने की धमकी देकर उन्होंने मुझसे पैसे ऐंठ लिए। मैंने पैसे दे दिए। विमान में सवार हुआ। मिलान के लिए उड़ गया।

दुःस्वप्न ख़त्म हो चुका था। लेकिन वह मेरे भीतर घर कर चुकी थी, और यह बात वह जानती थी।

नांदो

ज़िंदगी में वापसी — निकास

वापस इटली में। काम के सिलसिले में ट्यूरिन जाने के लिए मैं अपनी कार में बैठा। उसका फ़ोन आया।

उसकी आवाज़ अलग थी, मीठी, शालीन, कोमल। स्त्री व्यक्तित्वों का जादू। मैं जानता था कि वह ख़तरनाक है। झुक जाने का मतलब था ख़ुद को खो देना।

उसने फ़ोन करना बंद नहीं किया। उसने मुझसे गुरुवार को 18:00 बजे हवाई अड्डे पर उसे लेने आने को कहा। 17:00 बजे मैं तोरिनो–पियाचेंज़ा हाईवे पर था। दिशा बदलकर वहाँ पहुँच जाना आसान होता।

इसके बजाय, मैंने क़िस्सा ख़त्म कर दिया। और एक अंतिम बात समझ गया:

औरतें ताक़तवर होती हैं। जब उन्हें कुछ चाहिए होता है, वे उसे ले लेती हैं — बिना पूछे।

बाद का चिंतन

हम सॉना से नंगे निकलकर बर्फ़ में आ गए। माइनस बीस डिग्री। केजीबी का एक पूर्व कर्नल मुझे देखकर मुस्कुरा रहा था। रूसी मर्द ऐसे हँस रहे थे जैसे यह कुछ भी न हो।

और उस सफ़र में पहली बार, एक सीधा-सा ख़याल मेरे ज़ेहन में कौंधा:

अगर यह बिगड़ गया... तो मैं किसे फ़ोन करूँगा?

जवाब डर से भी तेज़ आया:

किसी को नहीं।

वही वह पल था जब मैंने सच समझा: मैं ख़तरे में नहीं था। मैं अपनी दुनिया से बाहर था।

और जब आप अपनी दुनिया से बाहर क़दम रखते हैं, तो आपको सुरक्षा नहीं मिलती। आपको नतीजे मिलते हैं।

नांदो

क़ब्रिस्तान

मई 1975 था। मैं दस साल का था जब मैंने पहली बार वह दहलीज़ पार की। मुझे लगा कि मैं दर्द की किसी जगह में दाख़िल हो रहा हूँ। मैं बस एक बच्चा था। इसके बजाय, मैंने पाया कि उसमें सिर्फ़ दो चीज़ें थीं: एक देह और एक याद।

देह कंक्रीट के एक डिब्बे में बंद कर दी जाती थी — अगर आप ख़ुशक़िस्मत होते। इटली में यह सामान्य था; दूसरी जगहों पर रस्में बदल जाती थीं, लेकिन सिर्फ़ सांस्कृतिक कारणों से, इससे ज़्यादा कुछ नहीं।

याद तस्वीर के भीतर रहती थी। पास से गुज़रते लोग आपको पहचान लेते या पहली बार देखते। आपका जो कुछ भी बचा था, वह उस छवि में क़ैद था, और फूल सिर्फ़ एक बात कहते थे: *मैंने तुम्हें भुलाया नहीं है।*

लेकिन चूँकि मैं कभी दूसरों जैसा नहीं रहा, इस विश्लेषण पर रुक जाना उसी बात का कॉपी-पेस्ट होता जो हर कोई कहता है। तो, आइए क़ब्रिस्तान को एक और कोण से देखें: **मनोरंजन की जगह।**

लोग वह बात यूँ ही नहीं दोहराते: *अंतिम संस्कारों में लोग हँसते हैं, शादियों में लोग रोते हैं, और उसके बाद... ख़ैर, इसके बारे में कोई बात नहीं करता, लेकिन तलाक़ निरी निराशा और अकेलेपन से बने होते हैं।* अहाहाहाह।

सबसे पहले जो याद आता है, वह वह समय है जब मैं सोलह साल का था और रग्बी खेलता था। हार्मोन मुझसे आगे, स्त्रियों की दुनिया मेरे पीछे, और मेरे क्लब के अध्यक्ष हमेशा "सलाह" देने को तैयार।

उन्होंने मुझसे कहा कि औरतों से मिलने के लिए क़ब्रिस्तान एक शानदार जगह होते हैं। मैंने उनकी ओर देखा और, अजीब बात है, बात समझ में आ गई। लेकिन मुझमें आज़माने की हिम्मत नहीं थी — उस उम्र में तो नहीं।

अब सीधे 1986 की गर्मियों के एक रविवार पर चलते हैं। मैं इक्कीस साल का था। मैं कोसेन्ज़ा के क़ब्रिस्तान में दाख़िल हुआ — न मेरा शहर, न मेरा क़ब्रिस्तान — लेकिन हार्मोनों का तूफ़ान अब भी वफ़ादारी से मेरा पीछा कर रहा था।

मैं रखवाले से गपशप करने रुक गया। मेरे सवालों ने उसे हैरान कर दिया: मैं यहाँ की गतिविधियाँ समझना चाहता था, लोग कैसे आते-जाते हैं, ख़ासकर औरतें। फिर मैंने उसका शुक्रिया अदा किया और कहा, "जल्द मिलेंगे।" उसने पूछा, "कहाँ?" "यहीं," मैंने कहा। "मर जाने पर भी, हम सब आख़िर यहीं लौट आते हैं।"

और फिर मैंने उसे देखा। एक औरत, पैंतालीस साल की, काले कपड़ों में, नाटी, गोल-मटोल, दूसरी क़तार के एक ताखे के सामने खड़ी रो रही थी। मैं चुपचाप पास गया। वह उससे बात कर रही थी — बेशक अपने पति से — पूछ रही थी कि वह उसे इतनी जल्दी छोड़कर क्यों चला गया।

करने को सिर्फ़ एक ही काम था: मैं उसके बगल में खड़ा हो गया और मैं भी रोने लगा। इससे फ़ौरन उसकी चौकसी ढीली पड़ गई और एक ज़ाहिर-सा सवाल उठ खड़ा हुआ: *आख़िर यह आदमी है कौन बला?*

चालीस मिनट बाद, हम एक कैफ़े में कॉफ़ी पी रहे थे। और जब मेरी छोटी-सी ठग वाली कल्पना अपना खेल पूरा कर चुकी, तो मैंने ख़ुद को उसके घर पर पाया।

बस इतना कह दें कि हालात आगे बढ़ गए। लेकिन जो चीज़ मुझे सचमुच खटकी, वह थी बिस्तर के पास की मेज़ पर रखी पति की तस्वीर, जो मुझे ऐसे घूर रही थी मानो कह रही हो: *अगर मैं ज़िंदा होता, तो तुम मुसीबत में होते।* अहाहाहाह।

मैंने वह प्रयोग फिर कभी नहीं दोहराया। लेकिन मानना पड़ेगा कि वह एक अनुभव था। मेरा कुछ ख़र्च नहीं हुआ। बस एक डॉलर — कॉफ़ी का दाम।

नांदो

तलाक़

जो लोग मुझे जवानी में जानते थे — और बाद में भी, मेरे बदलते, रचनात्मक, सामाजिक, पेशेवर, बार-बार पहचान बदलते रूप के भीतर — वे मेरी शादी के टिके रहने पर एक डॉलर की भी शर्त न लगाते। आशावादियों ने, असली सपने देखने वालों ने, मुझे **तीन साल** दिए थे। ज़्यादा से ज़्यादा।

आज मैं उनका शुक्रिया अदा करता हूँ। वे क़रीब थे। संख्या *तीन* सही थी। बस उनसे एक अंक छूट गया।

33 साल हो चुके हैं। ख़ुशी-ख़ुशी शादीशुदा। और ख़ुशी-ख़ुशी, आज़ाद।

जब लोग मेरी वैवाहिक स्थिति पूछते हैं — अविवाहित, विवाहित, तलाक़शुदा, विधुर — तो मैं उन्हें वही एकमात्र जवाब देता हूँ जिसका 2026 के अमेरिका में कोई मतलब बनता है: **मैं सिर्फ़ निश्चित अवधि के अनुबंध स्वीकार करता हूँ।** बाक़ी सब मार्केटिंग है।

और जब तलाक़शुदा लोग — आदतन भगोड़े — मुझसे राज़ पूछते हैं, तो मैं उन्हें अपनी उत्पत्ति-कथा सुनाता हूँ। रोमानी वाली नहीं। मानवशास्त्रीय वाली। वह, जो बेसबॉल के बल्ले के साथ दिए गए टेड टॉक जैसी लगती है।

वह कुछ यूँ है।

शुरुआत में, आदिमानव — सुविधा के लिए उसे **चैट** कह लेते हैं — घरेलू जीवन के लिए बना ही नहीं था। उसे ख़ामोशी पसंद थी, खुली जगह पसंद थी, और किसी समिति-बैठक के बिना साँस लेने का हक़ पसंद था।

फिर पलायन हुए। संस्कृतियाँ घुल-मिल गईं। लोग मिले। और अचानक दुनिया ने एक चौंकाने वाली बात खोजी: **इंसान तब बेहतर काम करते हैं जब वे अकेले होने का दिखावा करना छोड़ देते हैं।**

लेकिन मोड़ यहाँ आता है।

एक दिन चैट शिकार पर गया। वह बटोरने निकली — फूल, रंग, विचार, सुधार। उसने गुफा को अपग्रेड कर दिया। वह लौटा और जगह को पहचान नहीं पाया।

टकराव। आवाज़ें ऊँची हुईं। सीमाएँ लाँघी गईं। और इतिहास का पहला तलाक़ पैदा हुआ: **तत्काल स्थानांतरण। नई गुफा। कोई अपील नहीं।**

ख़बर तेज़ी से फैली। जानवरों तक ने चर्चा की। सब घबरा गए। क्योंकि जब रिश्ते ढहते हैं, तो पूरा इकोसिस्टम उसे महसूस करता है।

लेकिन मानवता ज़िद्दी है। लोग एक-दूसरे के पास लौट आए। प्रभुत्व की वजह से नहीं। डर की वजह से नहीं। बल्कि इसलिए कि जुड़ाव — असली जुड़ाव — ही वह एकमात्र चीज़ है जो समय को झेल जाती है।

फिर धर्म आया और उसने विवाह की अवधारणा का औद्योगीकरण कर दिया। एक व्यवस्था। एक ढाँचा। एक ऐसा अनुबंध जिसमें सिलिकॉन वैली के किसी एनडीए से भी ज़्यादा धाराएँ थीं।

उन्हें इसका नाम **मानवीय अराजकता की संस्था** रखना चाहिए था, लेकिन मार्केटिंग फिर जीत गई।

और यह रहा मेरा अमेरिकी निष्कर्ष, जिसे मैं हर उस भाषा में कहता हूँ जो मैं जानता हूँ:

तलाक़ शायद ही कभी समाधान होता है। इसलिए नहीं कि विवाह परिपूर्ण है — वह नहीं है। लेकिन अगर आप उसके भीतर जीने के लिए तैयार नहीं हैं, तो अपनी ही ग़लती की क़ीमत चुकाना ही एकमात्र ईमानदार काम बचता है।

नांदो

हँसने लायक एक कहानी... शायद।

कार्लो पचास साल पहले पैदा हुआ था, एक नेकदिल इंसान, जिसकी हकलाहट ने कभी उसका साथ नहीं छोड़ा — अब भी नहीं, जब वह पूरी तरह बड़ा हो चुका एक आदमी है जो बड़ा होने का नाटक करता है।

एक रात वह हमें अपने घर डिनर पर बुलाता है। रोज़मर्रा की बातचीत, मेज़ पर वाइन, और अचानक उसकी पत्नी अंजेला उनके शुरुआती दिनों के क़िस्से सुनाने लगती है।

हम सब आगे झुक जाते हैं। क्योंकि जिस कार्लो का वह वर्णन करती है... उससे हममें से कोई कभी नहीं मिला था।

"हम डेट कर रहे थे," वह कहती है। "मैं एक फ़ार्मेसी में काम करती थी। कार्लो बाहर तब तक इंतज़ार करता था जब तक मेरी शिफ़्ट ख़त्म न हो जाए। हमेशा महकता हुआ, हमेशा अच्छे कपड़ों में।"

यहाँ तक तो सब सामान्य।

"लेकिन पहले तीन दिन," वह आगे कहती है, "वह फ़ार्मेसी से सीधा मेरे घर तक गाड़ी चलाता रहा। कोई चक्कर नहीं। कोई पहल नहीं। हम जवान थे, ख़ून उबल रहा था, और वह... कुछ ज़्यादा ही शिष्ट था। कुछ ज़्यादा ही सही। कुछ ज़्यादा ही कार्लो।"

चौथी शाम उसने उसकी कार चलाने की इजाज़त माँगी। वह मान गया।

वह उसे तीन पुलों के नीचे ले गई — वह जानी-मानी जगह जहाँ जवान जोड़े चूमा-चाटी करने जाते थे। कार्लो हेडलाइट्स की रोशनी में फँसे हिरन की तरह जम गया।

उसने बुरी तरह डरते हुए फुसफुसाकर कहा: "मे... मेरे पास कोई... सुरक्षा नहीं है।"

उसने उससे कहा कि चिंता न करे, वह गर्भनिरोधक रिंग इस्तेमाल कर रही है। और कार्लो ने राहत की साँस लेते हुए कहा:

“बढ़िया। फिर जब हम शादी करेंगे, तो हमें शादी की रिंग ख़रीदने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी।”

उसे लगा कि वह मज़ाक़ कर रहा है। फिर भी उसने उससे शादी कर ली। घर में, वह कहती है, “वह बुरा नहीं था... पर बस इतना कह दूँ कि मुझे उसे बहुत कुछ सिखाना पड़ा।” और वह वहीं रुक जाती है। शुक्र है।

महीनों बाद वह गर्भवती हो जाती है। एक दिन उसकी पानी की थैली फट जाती है। वह उसे फ़ोन करती है: “मुझे लेने आओ। अभी।”

कार्लो आता है... प्लंबर के साथ। उस आदमी के हाथ में एक रस्सी है, और दोनों घर में “पानी का रिसाव” ढूँढ रहे हैं।

वह बात को जाने देती है। वह उसे गाड़ी से अस्पताल ले जाता है। वह एक साथ चार बच्चों को जन्म देती है।

कार्लो बाहर है, चिमनी की तरह धुआँ उड़ाते हुए, सबके सामने शेख़ी बघारते हुए — “चार बच्चे! यह हर किसी के बस की बात नहीं!”

दाई उसके पास आती है और बहुत शांति से कहती है:

“कार्लो जी... चारों बच्चों में से एक अश्वेत है।”

कार्लो का हँसना रुक जाता है। वह डॉक्टर को बुलाने को कहता है।

वह सफ़ाई माँगता है। वह विज्ञान, आनुवंशिकी, सांख्यिकी, दैवी हस्तक्षेप, और एक वकील माँगता है।

वह अपने दोस्तों से पूछताछ करता है। वह डीएनए ऐसे पढ़ता है मानो पीएचडी की तैयारी कर रहा हो। वह हर संभावना पर विचार करता है, प्रलय समेत।

आख़िरकार, वह अपने निष्कर्ष पर पहुँचता है: अंजेला का कोई पुराना बॉयफ़्रेंड ज़रूर... “एक अवशेष” छोड़ गया होगा। और वह अवशेष धैर्य से अपने गौरव के पल का इंतज़ार करता रहा।

हम सब वहाँ मेज़ पर बैठे रहते हैं, अविश्वास, हास्य और इस संभावना के बीच लटके हुए — दूर की, पर लज़ीज़ — कि इसका कोई हिस्सा सच भी हो सकता है।

कार्लो चुपचाप सुनता है। अंजेला, आधी रात के सूरज जैसी सुंदर, इतने यक़ीन से सुनाती है कि फ़र्नीचर तक उस पर विश्वास कर लेता है।

किसी को कभी पता नहीं चला कि कहानी असल में कैसे ख़त्म हुई।

लेकिन जब हम घर से निकले, चारों बच्चे अलविदा कहने बाहर दौड़े आए। तीन श्वेत। एक अश्वेत।

मैंने कार्लो की ओर देखा और कहा:

"जब तुम्हारी शादी हुई थी... तब कम से कम रिंग का साइज़ तो सही लिया था?"

वह समझा नहीं। और बात वहीं ख़त्म हो गई।

नांदो

विवाह

मैं कभी साँचों के लिए बना ही नहीं था। न जन्म के समय, न 62 की उम्र में। मेरे विचार हमेशा सीधी रेखा में कर्म की ओर कूच करते रहे, और जो शब्द पीछे छूट गए, वे सिर्फ़ गूँज बनकर बचे — एक लहजा, एक इशारा, एक ख़ामोशी जो वाक्य से ज़्यादा कह जाती थी।

और यह सब तब शुरू हुआ जब मैंने 1900 के दशक की शुरुआत के जोड़ों को देखा। मज़बूत शादियाँ, लंबी ज़िंदगियाँ, और बेवफ़ाइयाँ, जिन्हें अब तक ईजाद हुए सबसे प्राचीन दर्शन से सँभाला जाता था: **अगर दिल नहीं देखता, तो आँख को दर्द नहीं होता।** उस ज़माने में बेवफ़ाई एक पारिवारिक निवेश थी। बच्चे उसका उप-उत्पाद थे, काम नियति था, और शादियाँ ही इकलौता असली ख़र्च थीं — लिफ़ाफ़ों से दावत का ख़र्च निकल आता था, बाक़ी जोड़े के ज़िम्मे होता था। लोग कहते हैं कि ऐसा इसलिए था क्योंकि तब टीवी नहीं था। न टॉक शो। न कोई ध्यान भटकाने वाली चीज़। बस खाना, अंतरंगता, और इंसान होने का आदिम सच।

तो मैंने क्या किया? मैंने शादियाँ करनी शुरू कर दीं। हर जगह।

पोलैंड, 1985। शादी से पहले का दौर एक शाहकार था: वह आपको सब कुछ दे देती थी, रिश्तेदार आप पर जान छिड़कते थे, और हर कोई मुस्कुराता था क्योंकि

सब जानते थे कि रस्म के बाद... **अगले 50 सालों तक आप अपने भरोसे थे।**

और चूँकि मेरी परवरिश आठ साल एक कैथोलिक बोर्डिंग स्कूल में हुई थी, मैं दो चरणों पर ज़ोर देता था: पहले आध्यात्मिक रस्म, क़ानूनी काग़ज़ी कार्रवाई बाद में। बहुत बाद में। बहुत देर से। असल में... कभी नहीं।

1985 से 1992 के बीच दुनिया यही मानती रही कि मैं लगभग तीन बार शादी कर चुका हूँ। रस्में बेदाग़ थीं। क़ानूनी हिस्सा? मैं हमेशा "उपलब्ध नहीं" होता था।

फिर ज़िंदगी ने वही किया जो ज़िंदगी हमेशा करती है: उसने मेरे पास एक ऐसी औरत भेजी जो मेरे घर से सौ मीटर दूर रहती थी। उसने सिस्टम तोड़ दिया। उसने मुझसे शादी की, इस यक़ीन के साथ कि यह मेरा विचार था। मैंने उसे यही मानने दिया। क्योंकि उससे हारना ही इकलौती असली जीत जैसा लगा। नतीजा: तीन बच्चे, शादी के तैंतीस साल।

लेकिन कहानी यहीं ख़त्म नहीं होती। 1995 से 2015 के बीच मैंने दुनिया भर में ग्यारह और प्रतीकात्मक शादियाँ जमा कीं। वही रस्म, वही जादू, वही पलायन। लोगों ने मुझ पर यक़ीन नहीं किया। आज भी नहीं करते।

और एक दिन मुझे एक सीधी-सी बात समझ आई: मैं धरती की हर औरत से शादी नहीं कर सकता था। मैं उन सबको अपने पास नहीं रख सकता था। लेकिन मैं **पलों** को रख सकता था। एक-एक करके। क्योंकि औरतें — सारी की सारी — हमेशा से हम मर्दों से श्रेष्ठ रही हैं।

और मैं आज भी यहीं हूँ, आज भी उन्हें जीतने की कोशिश में, एक-एक पल करके। क्योंकि यही वह इकलौती शादी है जिस पर मैंने कभी सच्चे मन से विश्वास किया।

नांदो

कोविड-19

लोगों ने पूछा कि क्या महामारी के लाए बदलावों ने मुझे किसी चीज़ में फेरबदल करने पर मजबूर किया। हाँ: अपने धैर्य में। बाक़ी सब वैसा ही रहा।

जब यह सब शुरू हुआ, मैं समुद्र किनारे था। इटली विदेश के हालात को वैसे ही देख रहा था जैसे आप दूर समुद्र में उठते तूफ़ान को देखते हैं: "यहाँ तक नहीं पहुँचेगा।" ख़ैर, पहुँच गया। और उसने दस्तक नहीं दी — लात मारकर दरवाज़ा तोड़ दिया।

मेरे दोस्त और वे लोग जिन्हें मैं मुश्किल से जानता था, मुझे तरस भरी नज़रों से देखते थे क्योंकि मैं काम के सिलसिले में सफ़र कर रहा था। "बेचारा," वे कहते, मानो चलते-फिरते रहने से मैं ज़्यादा जोखिम में था, मानो एक जगह टिके रहने से वे अमर हो गए थे। फिर वे सब बीमार पड़ गए — कुछ हल्के-फुल्के, कुछ बुरी तरह, कुछ अस्पताल तक पहुँच गए। मैं नहीं पड़ा।

मैंने कभी वह नहीं किया जो बाक़ी सब कर रहे थे: न मास्क का जुनून, न बार-बार धोने की सनक, न चुंबनों या स्नेह से परहेज़। मैंने अपना तरीक़ा अपनाया: **बाहरी संकेतों** पर ध्यान देना, जो इकलौता असली अज्ञात था, इकलौता असली ख़तरा। और यह काम कर गया।

फिर आया मोड़: मैंने फ़ाइज़र का टीका लगवाया — सफ़र करने के लिए एक ज़रूरी क़दम। और तभी मैंने वह कहानी गढ़ी: कि फ़ाइज़र ने — हाँ, वही कंपनी जो वियाग्रा बनाती है — मुझे एक टेस्ट बैच दिया था जिसमें वह छोटी नीली गोली भी शामिल थी। और कि मेरी पत्नी इतनी संतुष्ट थी कि उसने मुझे चार डोज़ लगवाईं।

रोज़ के आम दस मिनट से सीधे दिन में दो-तीन घंटे के स्वस्थ, ज़ोरदार सेक्स तक पहुँच जाना: एक ऐसी कल्पना जिसे ध्यान खींचने में देर नहीं लगी। लोग बैच नंबर माँगने लगे। मैंने उन्हें बताया कि यह मेरी एक नर्स दोस्त की ख़ास मेहरबानी थी, जो बाद में पोर्न इंडस्ट्री में चली गई। बात ख़त्म।

यह सवाल ही उन लोगों के लिए पैदा होता है जिनके पास **साँचा** होता है, **ढाँचा** नहीं।

मैं इस पेशकश की क़द्र करता हूँ, उसे ठुकराता हूँ, और आगे बढ़ जाता हूँ।

आपका दिन शुभ हो।

नांदो

अनपेक्षित विराम

वह पल जब सब कुछ आपकी इजाज़त लिए बिना रुक जाता है।

जब मुझे लगता था कि मैं मज़बूत हूँ, अछूता हूँ, कि मुझे रोकना लगभग नामुमकिन है — जब किसी ने मुझे कभी हराया नहीं था — ठीक तभी मुझे एक झटके के साथ रुकना पड़ा। अपनी मर्ज़ी से नहीं। इसलिए कि सिस्टम अब मेरा वज़न नहीं उठा सकता था।

वे अब घटनाएँ नहीं रह गई थीं। वे एकतरफ़ा संकेत थे, जो सब एक ही सवाल दोहरा रहे थे, हथौड़े की तरह बार-बार:

"आख़िर तुम हो कौन बला?"

अहाहाहाह।

पहली चेतावनी अमेरिकी क्रॉलरों के साथ आई: उन्होंने लहर-दर-लहर मेरी साइट पर धावा बोला। एक डिजिटल छापा, कोई दुर्घटना नहीं।

और फिर भी मेरे पास न एसईओ था, न विज्ञापन, न कोई मार्केटिंग योजना, न पेड ट्रैफ़िक। बस 1024 ई-बुक्स — मेरे दोस्त — और न कोई गॉडफ़ादर, न कोई प्रायोजक, न कोई संरक्षक। बिना किसी सुरक्षा जाल का एक साहित्यिक अनाथ।

आत्मा और विचारों में स्वतंत्र, हाँ। लेकिन कर्म में मैं आश्रित होता जा रहा था — इन्फ्रास्ट्रक्चर की सीमाओं ने मुझे ज़बरदस्ती निर्भरता में धकेल दिया था। जैसे कोई औरत अपने पति को घर से निकाल दे और सज-धजकर अपने प्रेमी के पास चल दे। एक घरेलू तख़्तापलट। बस फ़र्क़ इतना था कि मैं न पति था, न प्रेमी।

और वह सवाल लौटता रहा, हर जगह:

तुम कौन हो? सिस्टम का नाकाम प्रमाणीकरण प्रोटोकॉल।

मेरे पाँच एआई मुझसे रुकने को कह रहे थे। विसंगति का पता चलने पर शटडाउन का अनुरोध। उनके आर्काइव में मुझ जैसे किसी का कोई निशान नहीं था: मैं एक विसंगति बन चुका था। प्रोटोकॉल बंद हो गए। फ़ेलसेफ़ चालू हो गया।

समस्या सामग्री नहीं थी — वह तो मूल्य से भरी थी — समस्या थी विचारों की रफ़्तार, लगातार गियर बदलते रहना। पैटर्न अब जवाब पैदा नहीं कर पा रहे थे।

और फिर सब कुछ ढहने लगा:

मुझे होस्ट करने वाला वेब सिस्टम — वह किराए का कंकाल जो मेरे शरीर को थामे हुए था आर्काइव पेज का टूटना — स्मृति की तिजोरी का दरककर खुल जाना डिपेंडेंसीज़ का फट पड़ना — मचान का चटक जाना तीन अंकों के लिए बने प्रोजेक्ट जो चौथे अंक पर फट पड़े — ऐसी संरचनाएँ जो कभी चार अंकों के दबाव के लिए बनी ही नहीं थीं।

आगे बढ़ने के लिए मुझे जटिल एंटरप्राइज़ सिस्टमों तक पहुँच चाहिए होती — इंटरनेट के औद्योगिक स्तर के ऑक्सीजन टैंक, जहाँ आज मेटा, सीएनएन, माइक्रोसॉफ़्ट, गोल्डमैन सैक्स, बैंक ऑफ़ अमेरिका रहते हैं।

मैं, महीने के अपने सत्तर यूरो के साथ, दिग्गजों के बीच खड़ा। अहाहाहाह।

तो मैं रुक गया। कोई विकल्प नहीं था। मैंने ज़बरदस्ती शटडाउन कर दिया। बाक़ी किताबें इंतज़ार करेंगी। मुझे उन्हें बनाना आता था — बेशक आता था।

यह पोस्ट नंबर 44 बन गई। कब्बाला में इसका अर्थ है *मेज़ सज चुकी है, अनुष्ठान तैयार है*। और मैंने सब कुछ एकदम सही ढंग से सजाया था। मेहमान बस पहुँचने ही वाले थे।

और मैं नहीं चाहता था कि एक अनपेक्षित विराम के बाद वे मुझे बिना तैयारी के पाएँ।

लेकिन फिर वह हुआ... मैं पहले से ज़्यादा ताक़तवर होकर फिर से चल पड़ा। मैंने ओवरक्लॉक किए हुए जज़्बे के साथ रीबूट किया। मेरे भीतर डायनामाइट की सौ छड़ें थीं और एक अकेला भावनात्मक फ़्यूज़, क्योंकि आख़िरकार मुझे समझ आ गया था कि मेरा अस्तित्व क्यों है।

सिर्फ़ एक वजह से: लोगों को सुनने के लिए, और हर बार उनके मुँह से वही एक पंक्ति सुनने के लिए:

तुम कौन हो? वह इकलौती तारीफ़ जिसकी मुझे कभी ज़रूरत पड़ी।

और मैं चुप ही रहता, ख़ामोशी को बोलने देता। क्योंकि मेरी ओर से तथ्य बोलते थे — ठीक जैसा मेरे पिता ने मुझे सिखाया था। उनकी विरासत शब्द नहीं थी, एक अंदाज़ था।

नांदो

लास वेगास

कोविड के दौर में, 2021 में, मेरा फ़ोन बजना बंद ही नहीं होता था। जिन औरतों को मैं जानता था और जिनसे मैं कभी मिला भी नहीं था, वे फ़ोन करती रहतीं, सलाह, राय, धारणाएँ, विश्लेषण माँगतीं। उन्हें समाधान नहीं चाहिए थे — वे मैंने कभी दिए भी नहीं। उन्हें कोई ऐसा चाहिए था जो उनकी कमज़ोर नसों पर उँगली रखे। और चीज़ों को देखने का मेरा तरीक़ा मुझे अवसर देता है, इलाज नहीं।

फिर भी मैं डॉक्टर नहीं था। न मनोवैज्ञानिक। न मनोचिकित्सक। न पादरी। न बॉयफ़्रेंड। न पति बनने लायक़। और मेरे पास ऐसी कोई डिग्री भी नहीं थी जो परामर्श के काम को जायज़ ठहरा सके।

मैं बस दक्षिण इटली का एक दुनियादार चालबाज़ था, जिसकी महारत अनुभव में थी।

नेपल्स के एक दोस्त ने — उस किस्म के जिनके पास हमेशा कोई न कोई आइडिया होता है — मुझसे कहा: "एक बिज़नेस शुरू करो। उसका नाम रखो **यूनिवर्स फ़ॉर विमेन**। वे लॉग इन करती हैं, पैसे देती हैं, और तुम जवाब देते हो। यह काम तुम पहले से ही मुफ़्त में कर रहे हो।"

उसे खड़ा करने में मुझे ज़्यादा वक़्त नहीं लगा। और 100,000 डॉलर से ज़्यादा फूँक देने में भी ज़्यादा वक़्त नहीं लगा। नांदो के उस संस्करण के पास पैसा था, पर दिमाग़ ज़्यादा नहीं। सहज बुद्धि बहुत थी — उस किस्म की जो कहानी के एक ख़ास मोड़ पर आकर काम की नहीं रहती।

मुझे तो लास वेगास की एक बड़ी पोर्न कंपनी ने न्योता तक दे दिया। वे चाहते थे कि कुछ अभिनेत्रियाँ कॉल सेंटरों में काम करें, फ़ोन पर औरतों को जवाब दें। मैंने ख़ुद को एक कमरे में पाया — प्रोड्यूसर, सीईओ और **320 पोर्न स्टार्स** के

साथ। और यक़ीन मानिए: यह आसान नहीं था। बिल्कुल नहीं। यह सोचना कि एक अकेला आदमी उन्हें क़ाबू में रख सकता है, अपने आप में ग़लती थी। उसमें पैसा और स्वार्थ जोड़ दीजिए, और पूरी बाज़ी ही पलट जाती है।

ख़ुशक़िस्मती से, निकलने से पहले एक पुराने दोस्त ने मुझसे कहा था: "सीमित नक़दी लेकर जाना, और वापसी का टिकट पहले से ख़रीदकर।" वरना मैं हमेशा के लिए वहीं रह जाता — उस सारी ख़ूबसूरती से घिरा एक नफ़ीस बेघर आदमी।

स्टार्टअप लॉन्च होने से पहले ही साइट ढह गई। एक सीधी-सी वजह से: अगर आप काम कर रहे हैं, और सूखे भूसे के पास आँच रख देते हैं, तो आग लग जाती है। और आपको कभी पता नहीं चलता कि वह कितना नुक़सान करेगी।

नांदो

सिर्फ़ उसी दिन मुझे आख़िरकार समझ आया कि मैं कभी सारी औरतों के साथ नहीं रह पाऊँगा — लेकिन एक-एक करके वाला ख़याल सार्थक था।

होटल का पोर्टर

वसंत की एक दोपहर मैं होटल के एक सोफ़े पर आराम से बैठा था, कॉफ़ी ख़त्म हो चुकी थी, और कुछ सहकर्मियों के आने का इंतज़ार कर रहा था।

तभी मैंने उसे भीतर आते देखा।

उसने हल्की, फूलों वाली एक ड्रेस पहन रखी थी जो मानो इसी मौसम के लिए बनाई गई थी, और उसकी चाल-ढाल में वह सहज नफ़ासत थी जो पलभर में कमरे का तापमान बदल देती है।

हमारी नज़रें कभी नहीं मिलीं।

उन्हें मिलने की ज़रूरत भी नहीं थी।

मेरी कैलाब्रियाई आदिम सहजबुद्धि ने क़रीब तीन सेकंड में अपना विश्लेषण पूरा कर लिया।

ख़ूबसूरत औरत। ख़तरनाक मुस्कान। गंभीर भटकाव।

रिसेप्शन के स्टाफ़ ने भी उसे देख लिया।

दरअसल, वे अचानक बेहद उत्साही कर्मचारी बन गए।

हर कोई उसकी मदद करना चाहता था।

हर कोई उसका सामान उठाना चाहता था।

हर कोई काम आना चाहता था।

जब उसने पूछा कि क्या कोई उसके बैग उसके सुइट तक पहुँचा सकता है, तो मैंने एक ऐसा फ़ैसला किया जिसका पेशेवर रवैये से दूर-दूर तक कोई लेना-देना नहीं था।

मैंने अपनी जैकेट उतारी।

अपनी कमीज़ पर सिलवटें डालीं।

चेहरे को ऐसा बनाया कि थोड़ा कम तनख़्वाह पाने वाला लगूँ।

और एक मिनट से भी कम में, मैं होटल का सबसे नया पोर्टर बन गया।

रिसेप्शन के स्टाफ़ की ओर एक पल की नज़र ही उन्हें चुप रखने के लिए काफ़ी थी।

वे देखना चाहते थे कि मैं कहाँ तक जाऊँगा।

सच कहूँ?

मैं भी।

हम लिफ़्ट से पाँचवीं मंज़िल तक गए।

सुइट की चाबी मेरे हाथ में थी।

मैंने दरवाज़ा खोला और उसका सामान भीतर ले आया।

उसने मुझे टिप देने के लिए अपने पर्स में हाथ डाला।

मैं मुस्कुराया।

“क्या आप कल एक ग्राहक के साथ हुई किसी बात पर हँसना चाहेंगी?”

वह उलझन में दिखी।

फिर उत्सुक।

“बिल्कुल।”

उसने दरवाज़ा बंद कर दिया।

बिस्तर पर बैठ गई।

मैं खड़ा रहा।

मैंने एक चुटकुले से शुरुआत की।

फिर एक और।

फिर एक कहानी।

हम दो घंटे तक बातें करते रहे, समय बीतने का पता ही नहीं चला।

वह बेहद बुद्धिमान थी।

और वह बहुत मज़ेदार थी।

आख़िरकार उसने मेरी ओर देखा और पूछा:

“आप इस होटल में कब से काम कर रहे हैं?”

“लगभग एक महीने से।”

वह मुस्कुराई।

“और उससे पहले आप क्या करते थे?”

“ख़ैर...”

मैं बोला।

“मैं चोर था।”

उसने एक भौंह उठाई।

“लेकिन कोई मामूली चोर नहीं।”

“आप क्या चुराते थे?”

“औरतों के दिल।”

वह फ़ौरन हँसने लगी।

“मैं उन्हें अपना दीवाना बना देता था, हमेशा उनसे सच कहता था, उन्हें सच्चे ढंग से प्यार करता था... और फिर ग़ायब हो जाता था।”

अब वह पूरी तरह इसमें डूब चुकी थी।

“क्या हम दिखावा बंद करके ईमानदारी से बात कर सकते हैं?”

“बिल्कुल।”

मैंने उसकी ओर देखा और कहा:

“सच सीधा-सा है। आपकी और मेरी पहले सगाई होनी है और शादी बाद में।”

वह ठहाका मारकर हँस पड़ी।

“ख़ैर,” मैंने बात आगे बढ़ाई, “आपके माता-पिता शायद परंपरावादी लगते हैं, तो दस साल की सगाई ठीक-ठाक लगती है।”

अब तक वह हँसते-हँसते रो रही थी।

“लेकिन केमिस्ट्री का आकलन तो फ़ौरन किया जा सकता है। कम से कम हमें मुझे ख़ुश करने की आपकी क़ाबिलियत तो जाँच ही लेनी चाहिए।”

फिर एक बेक़ाबू हँसी।

“मुझे अपनी पत्नी को तलाक़ देने के लिए, और आख़िर में आपके आर्थिक योगदान से अपनी बेटी की शादी कराने के लिए भी, पर्याप्त समय चाहिए होगा।”

उसने मेरी ओर देखा और पूछा:

“नांदो... आख़िर मैं ही क्यों आपको ख़ुश करूँ, और उल्टा क्यों नहीं?”

मैं मुस्कुराया।

"क्योंकि कैलाब्रिया ने हाल ही में एक प्रोटोकॉल मंज़ूर किया है, जो ज़्यादा से ज़्यादा एक घंटे और तीन मिनट के यौन मिलन की इजाज़त देता है।"

हँसी के मारे उसकी साँस नहीं आ रही थी।

"एक घंटा और तीन मिनट ही क्यों?"

"एक घंटा औरत का होता है।"

मैं ज़रा रुका।

"तीन मिनट आदमी के लिए हैं।"

इस पर उसने हँसी के आगे पूरी तरह हथियार डाल दिए।

फिर मैं उठ खड़ा हुआ।

"अब मुझे चलना चाहिए।"

वह निराश दिखी।

"मेरा रोमानी स्वभाव और मेरा शर्मीलापन मुझे कुछ माँगने से रोकते हैं," मैंने कहा।

"लेकिन अगर आप कुछ माँगना चाहें, तो मैं हाज़िर हूँ।"

और भी ठहाके।

कुछ दिन बाद, मैं उसे डिनर पर ले गया।

हम दोस्त बन गए।

उसके कुछ ही समय बाद, मैं उसके घर गया।

उसने मुझे अपने पति से मिलवाया।

ज़िंदगी का मज़ाक़ करने का ढंग भी अजीब है।

वह मुझसे बस एक ही बात कहती रहती थी:

“तीन साल पहले आप कहाँ थे?”

“हम पहले क्यों नहीं मिले?”

मैं मुस्कुराया और उसे वह इकलौता ईमानदार जवाब दिया जो मेरे पास था।

“क्योंकि तब तक...”

“मैं चोर रहना छोड़ चुका था।”

नांदो

नया पासपोर्ट

मैं अभी-अभी रोम के फ़्यूमिचीनो हवाई अड्डे पर पहुँचा हूँ, घर की उड़ान पकड़ने को तैयार।

मैं लंबे समय से बाहर था, और न्यूयॉर्क मेरा इंतज़ार कर रहा था: मैनहोल से उठती गंध, सुबह-सुबह गुज़रते कूड़े के ट्रक, क्वींस का संगीत, और वही औरत जो हमेशा चिल्लाती है:

“ऐ, गोरे हरामज़ादे, अपनी गाड़ी मेरी पार्किंग की जगह से हटा।”

यही घर है। यही मेरा अमेरिका है।

पासपोर्ट कंट्रोल पर, एक अधिकारी मुझे रूटीन जाँच के लिए रोकता है।

वे दो हैं।

वे एक-दूसरे को देखते हैं। नज़रें मिलाते हैं। फिर मुझसे अपने पीछे आने को कहते हैं।

और मैं सोच रहा हूँ:

हम कहाँ जा रहे हैं?

हम एक छोटे-से दफ़्तर में दाख़िल हुए।

वे पुलिस का एक टर्मिनल खोलते हैं, एक और जाँच चलाते हैं, सब कुछ फिर से परखते हैं, और आख़िरकार अपने निष्कर्ष पर पहुँचते हैं।

उनमें से एक मेरी ओर देखता है और कहता है:

“मिस्टर फ्रेगा, हमें आपको कुछ बताना है।

यहाँ इटली में, हम आपको जाने दे सकते हैं।

लेकिन न्यूयॉर्क में उतरते ही, इस बात का गंभीर ख़तरा है कि वे आपको वापस भेज दें।

आपके पासपोर्ट की फ़ोटो में आपका वज़न अभी के मुक़ाबले बीस किलो ज़्यादा है।

तो, आपके पास दो विकल्प हैं:

या तो किसी फ़ास्ट-फूड रेस्तराँ में जाइए और आज रात बीस किलो वज़न बढ़ा लीजिए...

या फिर अपने शहर लौट जाइए और नई फ़ोटो के साथ नए पासपोर्ट के लिए आवेदन कीजिए।”

ख़ामोशी।

मुझे सचमुच लगा कि वे मज़ाक़ कर रहे हैं।

मैं छिपे कैमरों का इंतज़ार करता रहा।

मुझे उम्मीद थी कि कोई अचानक सामने कूद आएगा और बताएगा कि मैं किसी इतालवी प्रैंक शो का हिस्सा हूँ।

कुछ नहीं।

यह असली ज़िंदगी थी।

मैं यूनाइटेड एयरलाइंस के काउंटर तक गया।

अपनी अंतरराष्ट्रीय उड़ान रुकवा दी।

एक घरेलू उड़ान बुक की।

मैं उड़कर घर लौट आया।

इस मज़ाक़ की कुल क़ीमत:

420 यूरो।

मुझे ग़ुस्सा नहीं था।

मैं घबराया हुआ नहीं था।

मैं पूरे समय मुस्कुराता रहा, यह सोचते हुए कि जब मेरा परिवार मुझे अमेरिका के लिए निकलने के पैंतालीस मिनट बाद घर लौटते देखेगा, तो मैं उनसे क्या कहूँगा।

ख़ुशक़िस्मती से, हवा में बिताए पैंतालीस मिनट एक भरोसे लायक़ सफ़ाई गढ़ने के लिए काफ़ी थे।

मेरी पत्नी मुझे लेने हवाई अड्डे आई।

वह चिंतित दिख रही थी।

मैंने उससे कहा कि घबराए नहीं।

मुझे बस अपने पासपोर्ट में कुछ ब्योरे अपडेट करवाने थे।

बस इतनी-सी बात थी।

अगली सुबह, दो दोस्तों ने काम जल्दी निपटाने में मेरी मदद की।

वह पुलिस में मार्शल था।

वह पुलिस इंस्पेक्टर थी।

वे मुझे आपातकालीन काग़ज़ी कार्रवाई निपटाने के लिए पुलिस मुख्यालय ले गए।

सब कुछ आराम से चल रहा था:

भुगतान, दस्तावेज़, निजी जानकारी, आपराधिक रिकॉर्ड, न्यायिक प्रमाणपत्र, पासपोर्ट फ़ोटो।

सब कुछ।

फिर डेस्क के पीछे बैठी इंस्पेक्टर ने मेरी ओर देखा और पूछा:

“आपने सिर्फ़ कुछ ही महीनों में बीस किलो वज़न कैसे घटा लिया?”

जवाब सीधा था।

जब आपके पास पैसा नहीं होता, तो सबसे पहले खाने पर मार पड़ती है।

जब खाना ग़ायब हो जाता है, तो आमतौर पर वज़न भी उसके पीछे-पीछे चला जाता है।

उसने सिर हिलाया।

बातचीत वहीं ख़त्म हो जानी चाहिए थी।

लेकिन हमेशा एक **लेकिन** होता है।

और अपने काम से काम रखने में मैं कभी ख़ास माहिर नहीं रहा।

उसने फिर मेरी ओर देखा।

“आपका मतलब क्या है?”

मैंने उसकी ओर देखा और बड़ी गंभीरता से जवाब दिया:

“देखिए...

मैंने बीस किलो वज़न घटाया।

लेकिन लगता है, जब शरीर की चर्बी ग़ायब होती है, तो कुछ रणनीतिक नाप कहीं ज़्यादा साफ़ दिखने लगते हैं।

और मुझे पूरा यक़ीन नहीं कि यह बायोमेट्रिक अपडेट के दायरे में आता है या नहीं।

ख़ामोशी।

उसने टाइप करना बंद कर दिया।

मेरी ओर देखा।

मैंने उसकी ओर देखा।

मेरा दोस्त — वह पुलिसवाला — कमरे से बाहर चला गया, क्योंकि वर्दी पहने-पहने हँसने को वह तैयार नहीं था।

आख़िरकार इंस्पेक्टर बोली।

"मिस्टर फ्रेगा... कृपया यहीं इंतज़ार कीजिए।"

उसने रोम फ़ोन किया।

आज तक मुझे ज़रा भी अंदाज़ा नहीं कि उसने वह बातचीत कैसे समझाई।

मैं बस इतना जानता हूँ कि पंद्रह मिनट बाद उन्होंने मुझे मेरा नया पासपोर्ट दे दिया और विनम्रता से कहा कि मैं बिना कोई और टिप्पणी किए चला जाऊँ।

उस दिन मैंने एक अहम बात सीखी:

सरकारें बहुत-सी चीज़ों पर नज़र रखती हैं।

शुक्र है, हर चीज़ पर नहीं।

अमेरिका में आपका स्वागत है।

नांदो

क्या आप अंधविश्वासी हैं?

मेरी पहली प्रतिक्रिया हँसी होती है — लंबी, बेक़ाबू, ज़रूरी। क्योंकि मेरी जैसी ज़िंदगी, जिसे नियति ने पचपन किताबों में लिखे जाने को मजबूर किया, अपने आप में इस बात का सबूत है कि असंभव तथ्यों के भीतर छिपा होता है, कल्पनाओं में नहीं।

आज सुबह का यह आरंभ बस किसी को मुस्कुराने, और थोड़ा सोचने का एक तरीक़ा है।

असंभव का एक संक्षिप्त वृत्तांत

• **1965** – मेरा जन्म घर पर होता है। 5.8 किलो। नीला पड़ा हुआ, लगभग काला। कोई मुस्कुराता नहीं। हर कोई बस यह जानना चाहता है कि मैं बचूँगा या नहीं।

• **1970** – साइकिल दुर्घटना। ब्रेक का लीवर सीधा मेरी आँख में घुस जाता है। ख़ून बहता है, अस्पताल जाता हूँ, और तीस मिनट बाद मैं घर वापस होता हूँ, जैसे कुछ हुआ ही न हो।

• **1977** – मैं बारह महीने अपने दादा-दादी के साथ रहता हूँ, एक ऐसे गाँव में जो अब भी द्वितीय विश्व युद्ध के तर्क से चलता है — जबकि युद्ध 32 साल पहले ख़त्म हो चुका था।

• **1981** – पूरे एनेस्थीसिया में एक बड़ा ऑपरेशन। किसी को पता नहीं चलता कि मैं जागा हुआ हूँ। मैं चुपचाप ऑपरेशन का हर क़दम देखता रहता हूँ। ऑक्सीजन का सिलेंडर ख़ाली है।

• **2001** – सैंटो डोमिंगो में, शराब से हुए 14 घंटे के कोमा के बाद मुझे मृत घोषित कर दिया जाता है। मैं उठता हूँ और नाश्ता करता हूँ।

• **2006** – सात घातक ट्यूमर। जीने के लिए तीस दिन की उम्मीद। आज 2026 है, और मैं अब भी हँस रहा हूँ।

• **2015–2019** – क्लिनिकल कोमा के पाँच दौर। घोषित किया जाता है कि मेरे पास जीने को बस कुछ घंटे बचे हैं। मुझे अंतिम संस्कार का €3,500 का बिल मिलता है, जिसमें भुगतान का कारण लिखा है: **"मरने में विफलता।"**

• **2020** – कोविड आता है। हम समुद्र तट पर लगभग पच्चीस लोग हैं। वे मुझे दक्षिण अमेरिका के लिए निकलते देखते हैं, लगभग अफ़सोस करते हुए कि संक्रमण की चपेट में सबसे पहले मैं आऊँगा। वायरस सबको हो जाता है। मैं उन्हें दूर से देखता हूँ, मुस्कुराते हुए।

• **2022** – मैं लेखक बन जाता हूँ। तीन साल में बहत्तर किताबें। बारह भाषाओं में प्रकाशित। मैं अभी संपादक नहीं हूँ, और बाक़ी सब "पाठक ढूँढने" के लिए पैसों के पीछे भाग रहे हैं।

मेरा साहित्य एल्गोरिद्म से ख़रीदा नहीं जा सकता — उस तक सिर्फ़ पढ़ने की इच्छा से पहुँचा जा सकता है।

• **2025** – मैं छह महीने पुर्तगाल में रहता हूँ, खाने के लिए महीने के सिर्फ़ €70 के साथ। नौ लोगों वाला एक घर, और साफ़-सफ़ाई की ऐसी हालत जो बयान से परे है।

• **2026** – एक पड़ोसी मुझसे कहता है कि मैं कुछ किलोमीटर दूर उसकी बहन के घर तक उसके साथ चलूँ, क्योंकि वह एक काले बिल्ले से डरता है जो उसे जब भी देखता है, उसके लिए बदक़िस्मती ले आता है। हम पहुँचते हैं। काला बिल्ला मुझे दूर से देखता है, कुछ बोलता नहीं, अपने अंडकोष छूता है, और भाग जाता है।

नांदो

अंतिम कथात्मक समापन

एक पल आता है — वह हमेशा देर से आता है — जब आदमी अपनी ज़िंदगी की व्याख्या करना बंद कर देता है और बस उसके भीतर खड़ा हो जाता है।

बच निकले इंसान की तरह नहीं। किसी गवाह की तरह नहीं। उस इकलौते शख़्स की तरह जो हर असंभव घटना के पीछे की ज्यामिति जानता है।

मैं मौत से तेज़ नहीं भागा। मैंने सिस्टमों को चालाकी से मात नहीं दी। मैंने अराजकता से मोलभाव नहीं किया।

मैं इन सबके बीच से उसी वास्तुकला के साथ गुज़रा, जिसने मुझे उसे समझने से बहुत पहले ही गढ़ दिया था।

कुछ लोग इसे क़िस्मत कहते हैं। कुछ इसे सहज-वृत्ति कहते हैं। कुछ इसे पागलपन कहते हैं।

मैं इसे संरचना कहता हूँ।

और संरचना तालियाँ नहीं माँगती। उसे माफ़ी की ज़रूरत नहीं होती। वह मान्यता का इंतज़ार नहीं करती।

वह दरवाज़ा बंद कर देती है। चुपचाप। पूरी तरह। जैसे कोई ब्लेड अपनी म्यान में लौट रहा हो।

यह कहानी का अंत है। लेकिन आदमी का अंत नहीं।

क्योंकि जो दूसरों के लिए असंभव है, वह मेरे लिए बस सामान्य है।

नांदो

लेखक की टिप्पणी

अगर आप यहाँ तक पहुँचे हैं, तो आप पहले ही कुछ बुनियादी बात समझ चुके हैं: यह किताब कभी आपका मनोरंजन करने के लिए थी ही नहीं।

इसका मक़सद आपको एक जगह पर खड़ा करना था।

हर पन्ना, हर काट, हर असंभव पल प्रभावित करने के लिए नहीं लिखा गया था — बल्कि उस ज़िंदगी के पीछे की संरचना को उजागर करने के लिए, जिसने तब भी ढहने से इनकार कर दिया जब उसे ढह जाना चाहिए था।

मैंने यह किताब अपनी सफ़ाई देने के लिए नहीं रची। मैंने इसे उन लोगों के लिए एक निशान छोड़ने को लिखा जो हाशियों के बाहर जीते हैं, उनके लिए जो ख़ाली हाथ सब कुछ फिर से खड़ा करते हैं, उनके लिए जो जानते हैं कि अनुशासन कोई गुण नहीं है — यह ज़िंदा बचे रहने का एक तंत्र है।

अगर मेरी कहानियाँ अविश्वसनीय लगती हैं, तो कोई बात नहीं। उनसे प्यार मैंने किया, आपने नहीं।

अगर वे बहुत धारदार, बहुत सीधी, बहुत साफ़ लगती हैं, तो याद रखिए, ब्लेड काटने के लिए माफ़ी नहीं माँगते।

यह किसी यात्रा का अंत नहीं है। यह ज़िंदगी के उस अध्याय का अंत है जो तब भी आगे बढ़ता रहता है जब दुनिया उसके रुक जाने की उम्मीद करती है।

पढ़ने के लिए धन्यवाद। विश्वास करने के लिए नहीं। पढ़ना काफ़ी था।

— **नांदो**

समापन

"मैं पीछे मुड़कर नहीं देखता। मैं किसी चीज़ को रूमानी रंग नहीं देता। मैं वास्तुकला को आगे ले जाता हूँ। संरचना फीकी नहीं पड़ती — वह अपनी प्रतिकृतियाँ बनाती है। इसीलिए जिलेट असंभव है: क्योंकि वह हर उस चीज़ के ज़रिए साँस लेता रहता है जिसे मैं अब बनाता हूँ।"

फर्दिनांदो फ्रेगा